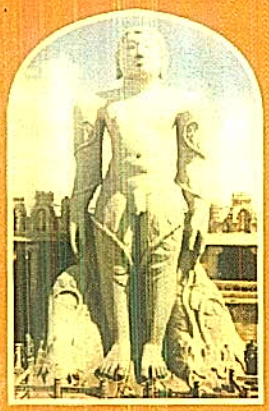

जैन तीर्थवंदना

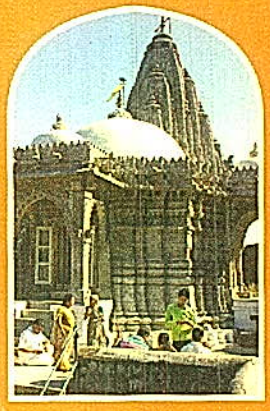

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

VOLUME : V | ISSUE : 5 | MUMBAI, NOVEMBER 2014 | PAGES : 36 | PRICE :₹25

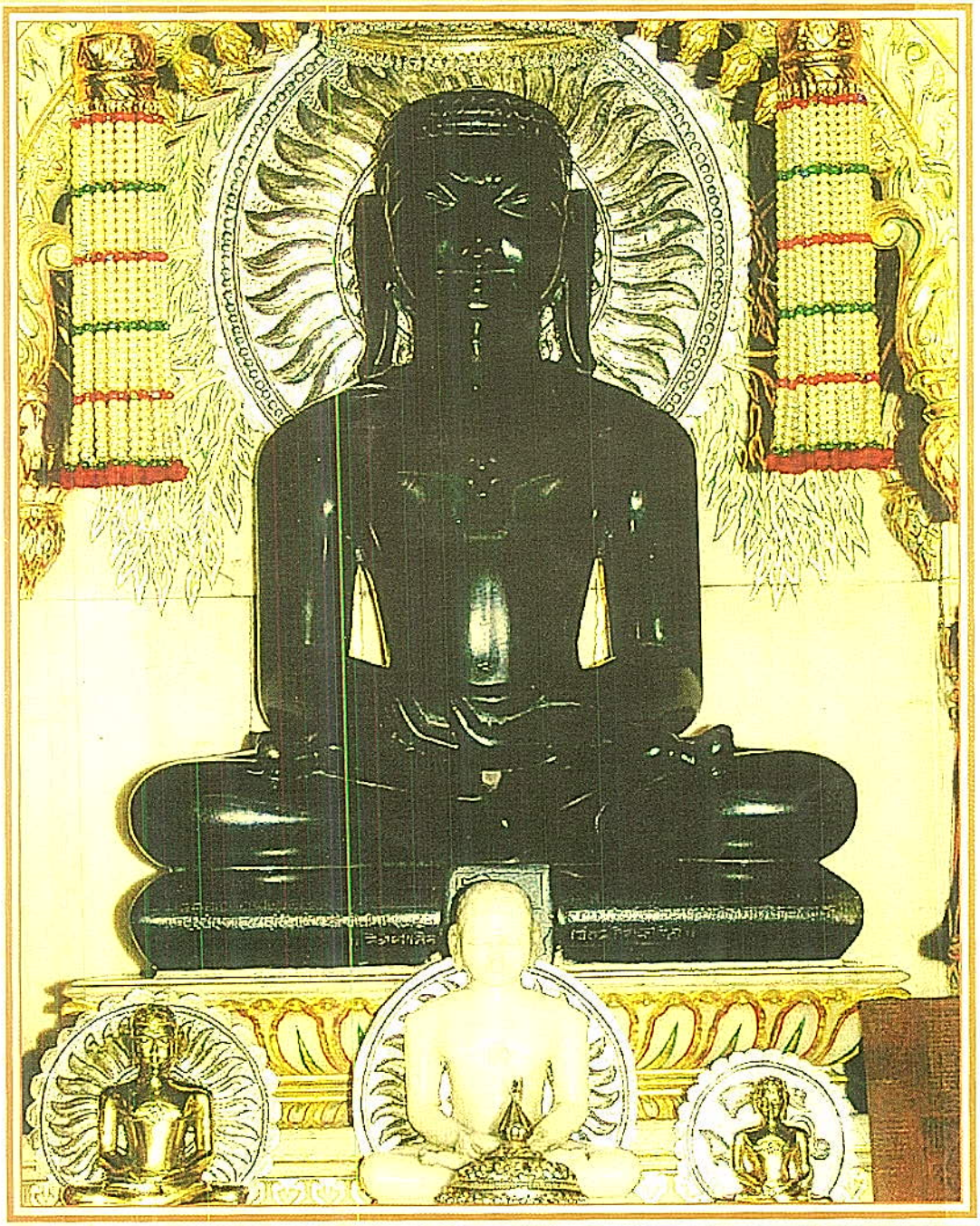

ग्यारहवें तीर्थंकर भगवान श्री श्रेयांसनाथ जी, वाराणसी-सारनाथ

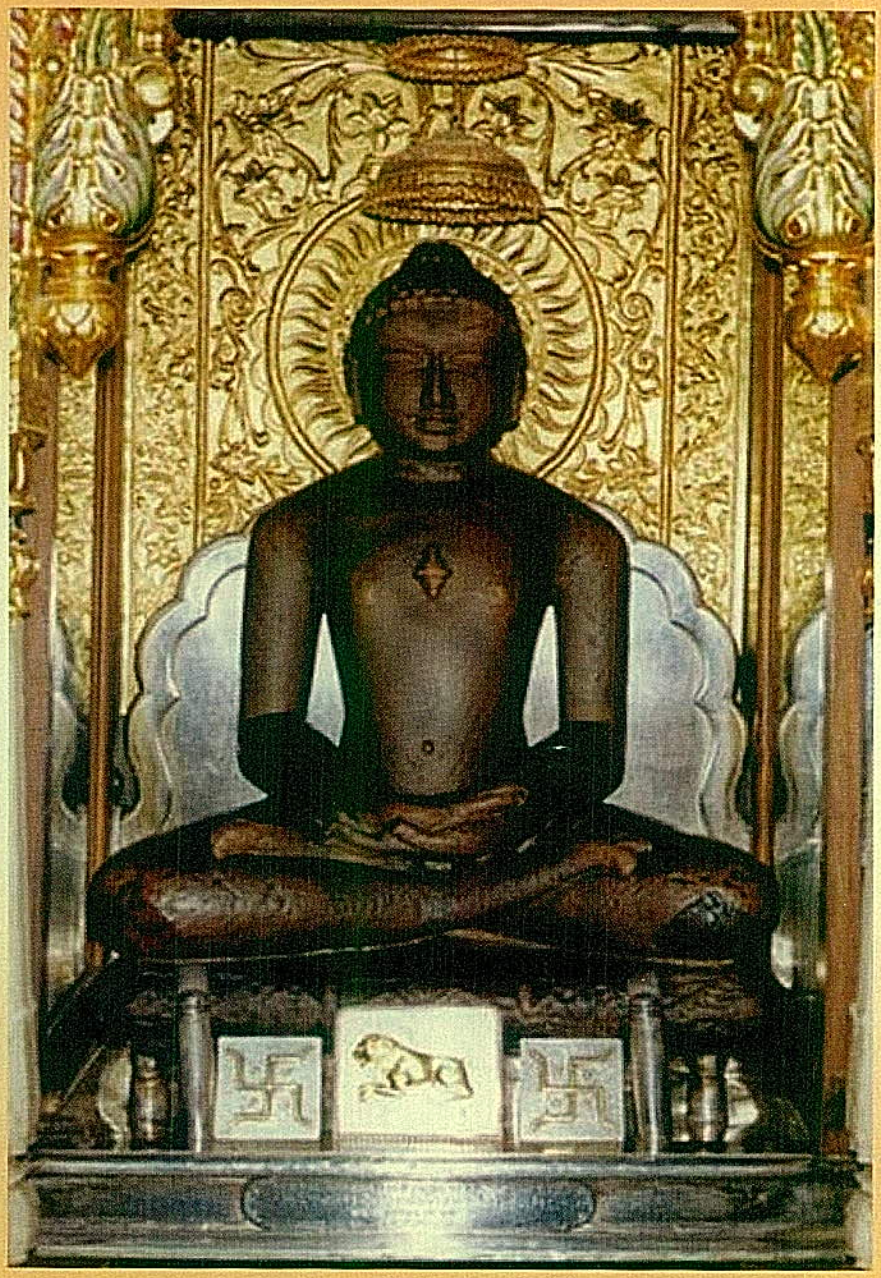

पतित पावन तरण तारण, हमारी फरियाद सुन लेना।
तेरे चरणों में मस्तक है, हमें अपना बना लेना।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

अध्यक्ष की कलम से

प्रिय साधर्मी बंधुओ,

सादर जय जिनेन्द्र।

इस युग के, वर्तमान के शासन नायक भगवान महावीर स्वामी का निर्वाणोत्सव हम सभी ने उल्लास के साथ लाडू अर्पण कर मनाया। साथ ही गौतम गणधर स्वामी को केवल्य ज्ञान प्राप्ति को प्रकाश एवं दीप मालिकाओं की रोशनी के साथ जगमगाया।

पूरे देश में प्राय: सभी स्थानों पर आचार्यों, मुनिराजों एवं आर्यिका संघों के सान्निध्य में अष्टान्हिका पर्व पर विधान-पूजन के आयोजनों में बढ़-चढ़कर सहभागिता दर्ज की। वीतरागता के शुद्ध भावों को अपनी क्षमता के अनुरूप अपने-अपने अंतरतम में उतारा।

चातुर्मास के निष्ठापन के साथ ही नगरों- क्षेत्रों में पिच्छिका परिवर्तन जो संयम का महापर्व है उसे भी व्रत-नियम को अंगीकार करते हुए मनाया।

सचमुच वे पुण्यशाली हैं जिन्हें महाव्रतियों को नई पिच्छिका प्रदान करने का एवं पुरानी पिच्छिका ग्रहण करने का सौभाग्य मिला तथा वे भी पुण्य में भागीदार हैं जिन्हें अनुमोदना करने का अवसर प्राप्त हुआ।

इस कलयुग में मुनिराजों की चर्या देखकर तो विश्मय होता है कि वो कौन सी आत्मशक्ति है जो उन्हें मन एवं पांचों इन्द्रियों पर नियंत्रण प्रदान करती है। परिषह सहन करने की अद्‌भुत शक्ति पैदा करती है। आत्म चिंतन एवं आत्मानुभूति का रसास्वादन कराती है, अलौकिक शांति का वेदन कराती है। ऐसे संतों के चरणों में कोटि-कोटि नमन निवेदित करता हूँ।

प्रश्न सहज उठता है मन में कि हम जैन कुल में जन्म लेने के कारण जैन हैं या जिन धर्म के मूल सिद्धांत (1) रात्रि भोजन त्याग (2) पानी छान कर पीना (3) देवदर्शन (4) जीवदया (अहिंसा) आदि के सिद्धांतों में विश्वास रखने के कारण जैन हैं।

थोड़ा सा चिंतन आवश्यक है। आत्म निरीक्षण जरूरी है। ऊपर के प्रश्न का उत्तर अपने अंत:करण से प्राप्त करना जरूरी है।

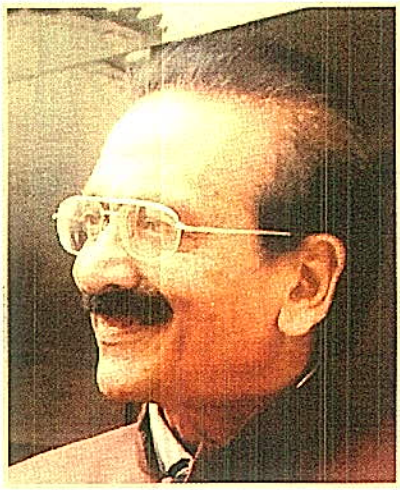

यदि 'अहिंसा परमोधर्म'' है तो हमारी सोच, हमारी जीवन शैली, हमारा खान-पान एवं हमारी आजीविका सभी में यह अहिंसात्मक भावना झलकना चाहिए। यह तभी संभव होगा जब ये संस्कार हमारे पालन-पोषण-शिक्षा के साथ-साथ पल्लवित हो। हम कब सोचेंगे, कब समझेंगे कि भारतीय संस्कृति, अंग्रेजों की शिक्षा पद्धति में घुट-घुट कर दम तोड़ रही है। कान्वेंट शिक्षा पद्धति हमें हमारे शाकाहार के मूलभूत संस्कारों से कोसों दूर करती जा रही है। छात्रावासों में पनप रही विदेशी खान-पान की शैली हमारे बच्चों की मानसिकता को कुंठित करती जा रही है उन्हें जैनत्व से विमुख करती जा रही है। उनके जीवन शैली के आधारभूत संस्कारों को निरंकुश बनाती जा रही है। बड़े होने पर ये पीढ़ी अपने को कितना 'जैन' कह पायेगी, 'कितना जैनत्व अपना पायेगी'?

हम कब चेतेंगे? कब जागेंगे? कब समझेंगे कि हम क्या-क्या खोते जा रहे हैं? हे प्रभु ..... हमें रोशनी दे ... हमें सद्‌बुद्धि दे ... हमें अंधकार के मायाजाल से निकाल कर अहिंसा-करुणा-जीवदया के भावों से भर दे ... हमें अच्छा इंसान बनने का मौका दे।

सारा जहां उसी का है, जो मुस्कुराना जानता है।

रोशनी भी उसी की है जो दीपक जलाना जानता है।।

हर जगह मंदिर, मस्जिद, देहरासर है,

लेकिन 'ईश्वर' तो उसी का है जो सिर झुकाना जानता है।।

'जय जिनेन्द्र

सुधीर जैन

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 5 अंक 5 **नवम्बर 2014**

परामर्श मण्डल

डॉ. नीलम जैन, पुणे
श्री संजय जैन 'मैक्स', इंदौर
श्री श्रीकिशोर जैन, दिल्ली

संपादक

उमानाथ आर. दुबे
डॉ. सुरेन्द्र जैन 'भारती', बुरहानपुर (मानद)

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370

e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 001210100017881 में किसी भी शाखा में निःशुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें.

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

जैनधर्म के ग्यारहवें तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथ भगवान्	7
तत्त्वचर्चा संगोष्ठी सम्पन्न	9
मूकमाटी : प्रशासनिक एवं न्यायिक दृष्टि	15
पू. मुनीन्द्र विद्यासागरजी को दिया आचार्य-पद चा. च. आचार्य ज्ञानसागर जी ने	19
नेपाल के राष्ट्पति ने किया ऐतिहासिक बुन्देली ग्रंथ विमोचित	22
स्वभाषा प्रेम के विषय में मूर्धन्य महानुभावों के विचार	2[illegible]
शाकाहार के विषय में महात्मा गांधी के विचार	27
अंचलीय समितियों का गठन	28
हमारे नये बने सदस्य	30

गिरनार-वंदन का प्रकाशन

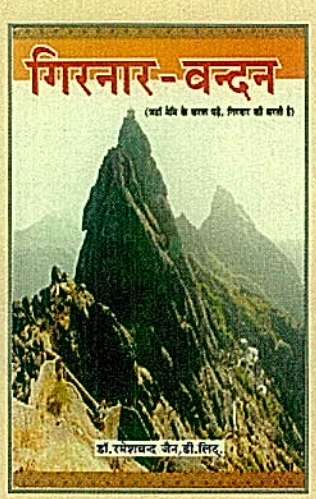

अनेकानेक कृतियों के सिद्धहस्त लेखक एवं ख्याति प्राप्त अनेकांत मनीषी डॉ. रमेशचन्द जैन, डी.लिट्. द्वारा लिखित 'गिरनार वंदन' कृति जैनधर्म के 22वें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ भगवान के निर्वाण से सिद्धभूमि बनी गिरनार पर्वत [illegible] पाँचवीं टोंक, मुनिश्री प्रद्युम्नकुमार के निर्वाण से सिद्धभूमि बनी चौथी टोंक, मुनिश्री शम्भुकुमार के निर्वाण से सिद्धभूमि बनी तीसरी टोंक और मुनिश्री श्री अनिरुद्धकुमार के निर्वाण से सिद्धभूमि बनी दूसरी टोंक तथा राजकुमारी राजुल की तपोभूमि गिरनार के स्वरूप, इतिहास, विभिन्न ग्रन्थों में आये उल्लेख आदि को अभिव्यक्त करने वाली महत्वपूर्ण पठनीय शोध कृति है। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुंबई के द्वारा प्रकाशित यह कृति गिरनार की पावन भूमि को समर्पित एक महनीय अर्घ्य है।

यह ग्रन्थ भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी कार्यालय- हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई- 400 004 में उपलब्ध है। मूल्य : 120/- रुपये डाक खर्च अलग।

तीर्थक्षेत्रों की ओर विहार करें दिगम्बर सन्त

–कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन

भगवान् महावीर निर्वाण दिवस दीपावली पर सभी दिगम्बर जैन सन्तों ने अपने चातुर्मास (वर्षायोग) निष्ठापन कर विहार की तैयारी प्रारंभ कर दी है। अष्टान्हिका पर्व भी समाप्त हो गया है। स्थान–स्थान पर चातुर्मास हेतु विराजित सन्तों के सान्निध्य में अष्टान्हिका पर्व में होने वाले विभिन्न सिद्धचक्र, अर्हच्चरण, इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम आदि विधानों के आयोजनों से महती धर्मप्रभावना हुई है। इसके पश्चात् सन्तों का विहार होना तय है। अगर विगत चातुर्मास की सूची पर एक नजर डालें तो प्रायः आचार्यों, मुनियों, आर्यिकाओं के चातुर्मास नगरों में ही सम्पन्न हुए हैं। वरिष्ठतम आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज प्रायः तीर्थ स्थलों पर ही चातुर्मास करते हैं। अन्य वे आचार्य एवं आर्यिकाएं जो स्थायी रूप से तीर्थक्षेत्रों पर ही प्रायः रहते हैं उनकी बात यहाँ मैं नहीं कर रहा हूँ; किन्तु जिन सन्तों ने नगरों में चातुर्मास कर व्यापक धर्मप्रभावना की है उन सन्तों से मेरी अपेक्षा है कि वे विभिन्न तीर्थक्षेत्रों में शीतकालीन प्रवास हेतु विहार करें। विभिन्न तीर्थक्षेत्रों से संबंधित प्रबंध समितियों को भी चाहिए कि वे साधु–सन्तों से निवेदन करें कि वे तीर्थक्षेत्रों की ओर विहार करें।

साधु–सन्तों के तीर्थक्षेत्रों पर विहार करने से एक तो तीर्थक्षेत्रों पर यात्रियों का आवागमन बढ़ेगा, दूसरे तीर्थक्षेत्रों की प्रभावना भी बढ़ेगी। इसके साथ ही तीर्थक्षेत्रों पर पुण्यार्जन से रुके हुए कार्य भी सम्पन्न हो सकेंगे। साधु--सन्तों के तीर्थक्षेत्रों पर प्रवास से, उनके प्रवचन से, भक्त तीर्थयात्रियों की भक्ति, आहार दान, वैयावृत्ति भावना से तीर्थक्षेत्रों पर और अधिक सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा। अतः साधु–सन्तों को तीर्थसंरक्षण की दिशा में पहल करते हुए अपना विहार तीर्थक्षेत्रों की ओर करना चाहिए। जो तीर्थ उपेक्षित हैं यदि उन पर जाने का सुयोग बने तो और भी अच्छी बात है।

दिनांक 9 नवम्बर, 2014 को श्री शीतलधाम, विदिशा (म. प्र.) में दयोदय महासंघ के द्वारा परम पूज्य संतशिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य तथा प्रतिष्ठाचार्य ब्रह्मचारी प्रदीप 'सुयश' के आचार्यत्व में आयोजित श्री अर्हच्चरण विधान महोत्सव के समापन पर आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने कहा कि कार्य करने वालों को भी काल से बांधना आवश्यक है ताकि वे समय से कार्य पूरा कर सकें। लोगों की यह धारणा है कि जैन लोग प्रायः जैनियों तक ही सीमित रहते हैं किन्तु आप लोग इस दीवार से बाहर आ गये हैं और अहिंसा को अपना धर्म बना लिया है। अतः अहिंसा के लिए कार्य करें। आप लोग पूजन पीठिका में पढ़ते हैं कि–

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनी–भूत–पन्नगाः ।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे।।

अर्थात् अरिहंतादि पंच परमेष्ठी भगवान् का स्तवन करने से विघ्नों के समूह नष्ट हो जाते हैं एवं शाकिनि, डाकिनि, भूत, पिशाच, सर्प, सिंह, अग्नि आदि का भय नहीं रहता और बड़े हलाहल विष भी अपना असर त्याग देते हैं। जिनभक्ति की कितनी महिमा है कि अग्नि पानी हो जाती है, विघ्न दूर हो जाते हैं, विष अमृत बन जाता है, नाग का हार बन जाता है। देवों के द्वारा विघ्न क्यों होंगे, उनको भी भक्त बनाओ। देव और मनुष्य दोनों मिलकर भक्ति करो। मिलकर अर्घ्य चढ़ाओ। स्वर्ग के देवों की पूजा क्यों करते हो?

अहिंसा का बड़ा महत्त्व है। उसी के बल पर तीर्थंकर बने हैं। अपने आपके मन के ऊपर, इन्द्रियों के ऊपर विजय प्राप्त करना है। अहिंसा को मुखिया बनाओ। यही आत्मधर्म है। शब्दों का बड़ा महत्त्व है। अनेक अर्थ निकलते हैं। अपने लिए व्यापकता लाना है। सागर को महासागर (विशाल) बनाना है। हम अहिंसा के माध्यम से ही मित्रता को फैला सकते हैं। अहिंसा को फैलाओ। जो विघ्न आते हैं, उन्हें आने दो, उनसे डरना नहीं है। नीति भी कहती है– "श्रेयांसि बहुविघ्नानि"। यदि बड़े विघ्न आ रहे हैं तो मान लेना कि कोई बड़ा कार्य हो रहा है। अहिंसा से ही विश्वशान्ति संभव है। अहिंसा ही परम धर्म है।

यदि तुम सदा ही गौरवमय बनना चाहते हो तो सबके प्रति श्रेयमय व्यवहार करो (तिरुवल्लुर)

आचार्य श्री के उक्त उद्गार प्रेरक हैं। सब जानते हैं कि **हमारे जैन तीर्थक्षेत्रों पर अहिंसा बसती है क्योंकि अहिंसा के प्रवर्तक/प्रवर्धक तीर्थंकरों के कल्याणकों से वह भूमि पवित्र हुई हैं।**

श्री अर्हच्चरण विधान महोत्सव के मध्य दि. 6 से 8 नवम्बर, 2014 तक भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुम्बई की ओर से डॉ. जयकुमार जैन एवं कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन के नेतृत्व में श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् के विद्वानों की सहभागिता में प.पू. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में तत्त्व चर्चा संगोष्ठी आयोजित की गयी। **संगोष्ठी के द्वितीय दिवस भा.दि. जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष स. सिंघई सुधीर जैन कहाकि "हम सब गुरुदेव आपके समीप दिशादर्शन हेतु आये हैं। आपके शुभाशीर्वाद से अनेक तीर्थों का पहले भी संरक्षण हुआ है, वर्तमान में हो रहा है और आगे भी होगा। आपका शुभाशीर्वाद अपेक्षित है।"** सिंघई सुधीर जैन की इस मंगल भावना के साक्षी जैन गौरव श्री अशोक पाटनी, श्री प्रभात जैन, मुम्बई, श्री पंकज जैन (महामंत्री), श्री खुशाल जैन, श्री संजय मैक्स आदि तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारी बने। सभी ने आचार्यश्री से शुभाशीर्वाद की कामना की।

आचार्य श्री ने समाज को प्रेरणा दी कि तीर्थक्षेत्र अचल हैं, उनकी वन्दना से पापों का क्षय होता है। आत्मा निर्मल होती हैं। श्रमण चलते फिरते तीर्थ हैं अतः तीर्थ और श्रमण; दोनों का संरक्षण करें।

साधूनां दर्शनं पुण्यं तीर्थभूता हि साधवः ।
तीर्थं फलति कालेन सद्यः साधु समागमः।।

अर्थात् साधुओं का दर्शन पुण्य है क्योंकि साधु तीर्थस्वरूप हैं। तीर्थ तो समय पाकर फल देता है पर साधु समागम शीघ्र ही फल देता है।

यदि श्रमण और श्रावक तीर्थ क्षेत्रों की प्रभावना एवं विकास में क्रमशः प्रेरक एवं सहभागी बने; तो तीर्थक्षेत्रों का संरक्षण होगा और भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मनोबल भी बढ़ेगा।

जैनधर्म के ग्यारहवें तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथ भगवान्

कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन

जैनधर्म की प्रशस्त तीर्थंकर परम्परा में ग्यारहवें तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथ भगवान् का नाम श्रेयकारी है, अभिलाषाओं की पूर्ति में सहायक है। पुष्करार्द्ध द्वीप के पूर्वविदेहक्षेत्र के सुकच्छ देश में सीता नदी के उत्तर तट पर स्थित क्षेमपुर नामक नगर के राजा नलिनप्रभ ने राज भोग के पश्चात् संयम धारण कर ग्यारह अंगों का अध्ययन किया, तीर्थंकर प्रकृति का बंध किया और समाधिमरण कर सोलहवें अच्युत स्वर्ग के उत्तर विमान में अच्युत नामक इन्द्र पद प्राप्त किया। वहाँ से उत्तमोत्तम सुखों का भोग करते हुए आयु पूर्ण कर जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में सिंहपुर नगर के इक्ष्वाकुवंशी राजा विष्णु की सुनन्दा (सुजन्य, वेणुदेवी) नामक महारानी के गर्भ में ज्येष्ठ कृष्ण षष्ठी के दिन श्रवण नक्षत्र में प्रवेश किया। पूर्व रात्रि में देखे हुए सोलह स्वप्नों का फल राजा विष्णु ने बताया कि तुम्हारे गर्भ से जिस बालक का जन्म होगा वह तीर्थंकर पद को प्राप्त करेगा। रानी सुनन्दा यह समाचार सुनकर अत्यधिक हर्षित हुई। देवों ने आकर गर्भकल्याणक महोत्सव मनाया।

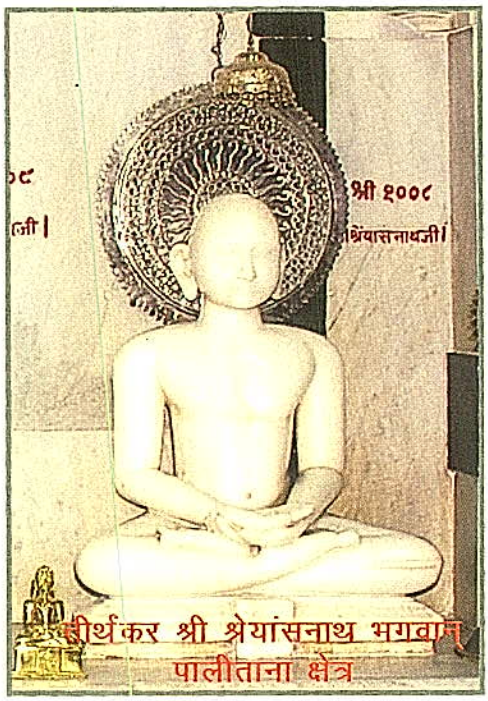

तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथ भगवान्
पालीताना क्षेत्र

नौ माह व्यतीत होने पर फाल्गुन कृष्ण एकादशी के दिन विष्णु योग में तीर्थंकर बालक का जन्म हुआ। जन्म के साथ ही वह तीन ज्ञान के धारी, एक हजार आठ शुभ लक्षणों से सुशोभित और जगत् को हर्ष एवं शांति प्रदान करने वाले थे। जन्म के साथ ही सौधर्म इन्द्र का आसन कम्पायमान हुआ जिससे उसने जाना कि सिंहपुर में राजा विष्णु के यहाँ रानी सुनन्दा ने तीर्थंकर शिशु को जन्म दिया है। वह सम्पूर्ण देव परिकर के साथ सिंहपुर आया और ऐरावत हाथी पर तीर्थंकर शिशु को बिठाकर सुमेरु पर्वत पर ले गया। वहाँ पाण्डुक शिला पर क्षीरसागर के जल से भरे हुए एक हजार आठ कलशों से उनका अभिषेक किया तथा जन्म कल्याणक महोत्सव मनाया तथा उनका नाम श्री श्रेयांसनाथ घोषित किया।

तीर्थंकर के जन्म के साथ प्रकृति ने अपना वैभव दिखाया। छह ऋतुओं के फल–फूल एक साथ दिखाई देने लगे। जलाशय जल से आपूरित हो गये और उनमें खिले हुए कमल आनन्द के कारण बन गये। भगवान् का जन्म होने पर राजा विष्णु ने अपना धन भण्डार खोल दिया जिससे याचक लोग धन पाकर हर्षित हुए, धनी लोग दीन मनुष्यों को सन्तुष्ट करने से हर्षित हुए और वे दोनों इष्ट भोग पाकर सुखी हुए। भगवान् के जन्म का अतिशय पाकर रोगी निरोग हो गये, शोक वाले अशोक (शोक रहित) हो गये, पापी जीव धर्मात्मा बन गये। तीर्थंकर का इससे अधिक अतिशय क्या होगा कि प्रकृति और मनुष्य क्या सम्पूर्ण जीव जगत् शांति को प्राप्त हो गया।

दसवें तीर्थंकर श्री शीतलनाथ भगवान् के मोक्ष जाने के बाद जब सौ सागर और 66 लाख 26 हजार वर्ष कम 1सागर प्रमाण अन्तराल बीत गया तथा आधे पल्य तक धर्म की परम्परा टूटी रही तब भगवान् श्रेयांसनाथ का जन्म हुआ था। उनकी आयु भी इसी अन्तराल में सम्मिलित थी।

तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथ की कुल आयु 84लाख वर्ष की थी। शरीर स्वर्ण के समान कांतिवाला था, ऊँचाई 80 धनुष की थी। उनका चिन्ह गैंडा था। वे अप्रतिम बल, ओज और तेज के भण्डार थे। उन्होंने सुखमय वैवाहिक जीवन व्यतीत किया। अपनी कुमारावस्था के 21 लाख वर्ष व्यतीत होने पर उन्होंने राज्य प्राप्त किया। उनके राजत्व को सम्पूर्ण प्रजा ने आदरभाव से स्वीकार किया। वे चन्द्रमा के समान सम्पूर्ण प्रजा को सन्तुष्ट करते थे। वे स्वयं महामणि के समान तेजस्वी, समुद्र के समान गंभीर, चन्द्रमा के समान शीतल और धर्म के समान चिरकाल तक कल्याणकारी श्रुत–स्वरूप थे। पूर्व पुण्य के परिणाम स्वरूप उन्हें सम्पूर्ण प्रकार की सम्पदाएं सहज प्राप्त थीं। उनकी बुद्धि और पौरुष का सम्बन्ध धर्म और काम से था, अर्थ की चिन्ता उन्हें नहीं थी।

राजा श्री श्रेयांसनाथ ने 42 वर्ष तक प्रजा को सुखदायक राज्य किया। एक दिन वसन्त ऋतु का परिवर्तन देखकर उन्होंने विचार किया कि जिस काल ने इस समस्त संसार को ग्रस्त कर रखा है वह काल भी जब क्षण, घड़ी, घण्टा आदि के परिवर्तन से नष्ट होता जा रहा है तब अन्य किस पदार्थ में स्थिरता रह सकती है? यथार्थ में यह समस्त संसार विनश्वर है। जब तक शाश्वत अविनाशी–मोक्ष पद प्राप्त नहीं कर लिया जाता, तब तक एक जगह सुख से कैसे रहा जा सकता है? मेरे

णायं णरस्स सारो (दंसणपाहुड़, गा.31)। अर्थ- मनुष्य का सार ज्ञान है।

लिये तो मोक्ष प्राप्ति की साधना करना ही इष्ट है।

राजा श्री श्रेयांसनाथ के इस विचार को जानकर सारस्वत आदि लोकान्तिक देव उनके पास आये और उनके विचार की प्रशंसा करते हुए उनकी स्तुति करने लगे। राजा श्री श्रेयांसनाथ ने अपने पुत्र श्रेयस्कर के लिए राज्य दिया। इन्द्रों ने दीक्षा कल्याणक के अनुरूप राजा श्री श्रेयांसनाथ का महाभिषेक किया। तदनन्तर वे विमलप्रभा नामक पालकी पर सवार होकर मनोहर नामक महाउद्यान में पहुँचे और दो दिन के लिए आहार का त्याग कर फाल्गुन कृष्ण एकादशी के दिन प्रातः काल में श्रवण नक्षत्र में एक हजार राजाओं के साथ पंचमुष्टि केशलोंच कर दिगम्बर जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण कर ली। उसी समय उन्हें मनःपर्यय ज्ञान उत्पन्न हो गया।

मुनि श्रेयांसनाथ आहार ग्रहण करने हेतु सिद्धार्थनगर पधारे। वहाँ स्वर्ण के समान कांतिवाले राजा नन्द ने उन्होंने नवधाभक्तिपूर्वक आहार दिया जिससे पंचाश्चर्य हुए तथा राजा नन्द ने अतिशय पुण्य प्राप्त किया।

छद्मस्थ अवस्था के दो वर्ष व्यतीत हो जाने पर महामुनि श्रेयांसनाथ मनोहर उद्यान में दो दिन के उपवास का नियम लेकर तुम्बुर वृक्ष के नीचे बैठे और वहीं पर उन्हें माघ कृष्ण अमावस्या के दिन श्रवण नक्षत्र में सायंकाल के समय चार घातिया कर्मों के नाश होने पर केवलज्ञान उत्पन्न हो गया। देवों ने आकर केवलज्ञान कल्याणक महोत्सव मनाया।

सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने समवशरण की रचना की। तीर्थंकर सर्वज्ञ श्री श्रेयांसनाथ भगवान् अन्तरिक्ष में विराजमान थे। उनके कुन्थु आदि 77 गणधर थे। 1,300 पूर्वधारी, 48,200 उत्तम शिक्षक मुनि, 6,000 अवधिज्ञानी, 6,500 केवलज्ञानी, 11,000 विक्रिया ऋद्धिधारी, 6,000 मनःपर्यय ज्ञानी और 5,000 मुख्य वादियों से वे सेवित थे। इस प्रकार कुल मिलाकर 84,000 मुनियों से युक्त थे। उनके समवशरण में धारणा (चारणा) आदि 1,20,000 आर्यिकाएं , 2,00,000 श्रावक, 4,00,000 श्राविकाएं तथा असंख्यात देव–देवियां और संख्यात तिर्यंच थे। उनके मुख्य श्रोता राजा त्रिपृष्ठ थे। तीर्थंकर सर्वज्ञ श्री श्रेयांसनाथ की दिव्यध्वनि से सभी जीवों ने अपनी आत्मा को पवित्र करने वाला दिव्य उपदेश ग्रहण किया। आचार्य श्री समन्तभद्र स्वामी ने वृहत्स्वयंभू स्तोत्र में लिखा है कि–

विवक्षितो मुख्य इतीष्यतेऽन्यो गुणोऽविवक्षो न निरात्मकस्ते।
तथारिमित्रानुभयादिशक्तिर्द्वयावधेः कार्यकरं हि वस्तु।।

अर्थात् हे भगवन्! आपके मत में विवक्षित मुख्य कहलाता है और दूसरा अविवक्षित पदार्थ गौण कहलाता है। जो पदार्थ अविवक्षित है वह अभाव रूप नहीं है। मुख्य और गौण की इस विधि से पदार्थ शत्रु, मित्र और अनुभय आदि शक्तियों से युक्त होता है। निश्चय से समस्त पदार्थों की भाव–अभाव अथवा द्रव्य और पर्याय रूप मर्यादा है और उसी मर्यादा का आश्रय कर वस्तु कार्यकारी होती है।

इस प्रकार श्री विहार करते हुए जब वे श्री सम्मेदशिखर पहुँचे तब वहाँ उन्होंने एक माह तक योग निरोधकर 1,000 मुनियों के साथ प्रतिमा योग धारण किया। श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के दिन सायंकाल धनिष्ठा नक्षत्र में विद्यमान कर्मों की असंख्यात गुण श्रेणी निर्जरा की और अ इ उ ऋ लृ इन पाँच लघु अक्षरों के उच्चारण में जितना समय लगता है उतने समय में अंतिम दो शुक्लध्यानों से समस्त कर्मों को नष्ट कर उन्होंने पंचम गति अर्थात् मोक्ष को प्राप्त किया। उनके निर्वाण के साथ मुक्त मुनियों की संख्या 1,000 है। देवों ने उसी समय आकर निर्वाण कल्याणक महोत्सव बनाया।

तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथ की यह विशेषता थी कि उन्होंने चराचर विश्व को जानने के बाद भी अपने आत्म स्वरूप में स्थिति की। उनके वचन सत्यमय, हितकारक और दयामय थे। उनका समस्त चारित्र सभी प्राणियों के लिए हितकारी था और है। इसीलिए आचार्य श्री गुणभद्र ने कहा कि–

श्रेयः श्रेयेषु नास्त्यन्यः श्रेयसः श्रेयसे बुधैः।
इति श्रेयोऽर्थिभिः श्रेयः श्रेयांसः श्रेयसेऽस्तु नः।।

अर्थात् जो आश्रय लेने योग्य हैं उनमें श्रेयांसनाथ को छोड़कर कल्याण के लिए विद्वानों के द्वारा और दूसरा आश्रय लेने योग्य नहीं है। इस तरह कल्याण के अभिलाषी मनुष्यों के द्वारा आश्रय करने योग्य भगवान् श्रेयांसनाथ हम सबके कल्याण के लिए हों।

वर्तमान में उत्तरप्रदेश का वाराणसी के समीपवर्ती सारनाथ तीर्थ ही सिंहपुरी है और यह तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथ की जन्मभूमि के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथ का जिन मन्दिर बना हुआ है तथा मनोहर उद्यान में तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथ की विशाल पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। देश–विदेश के लाखों दर्शनार्थी प्रतिवर्ष यहाँ आकर तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथ के दर्शन कर धर्म लाभ एवं पुण्य संचय करते हैं। आप भी सारनाथ आयें और तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथ की जन्मभूमि के दर्शन कर लाभान्वित हों।

महामन्त्री–श्री अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद्
एल–65, न्यू इन्दिरानगर, बुरहानपुर (म.प्र.)
मो. 09826565737

परोपकारी के हाथ का धन उस वृक्ष के समान है जो औषधियों का सामान देता है और सदा हरा बना रहता है (तिरुवल्लूर)

वरिष्ठतम आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के सान्निध्य में भा.दि.जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद् के तत्त्वावधान में तत्त्वचर्चा संगोष्ठी सम्पन्न

- डॉ.सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती'

विदिशा (म.प्र.) स्थित शीतलधाम में जैनधर्म के वरिष्ठतम आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज (ससंघ–41 पिच्छि) के सान्निध्य में श्री ब्र. प्रदीप 'सुयश' (अशोकनगर) के आचार्यत्व में आयोजित श्री अर्हच्चरण विधान महोत्सव दि. 1 से 9 नवम्बर, 2014 के मध्य दि. 6,7,8 नवम्बर, 2014 को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुम्बई के तत्त्वावधान एवं श्री अखिलभारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् (रजि.) की सहभागिता में तत्त्वचर्चा संगोष्ठी सम्पन्न हुई। इस संगोष्ठी में ब्र. राकेश जी, ब्र. संजय जी, ब्र. अनिल जी, ब्र. पारस भैया आदि शताधिक ब्रह्मचारी भाईयों एवं ब्रह्मचारिणी बहिनों की उपस्थिति के साथ विद्वत्परिषद् के अध्यक्ष डॉ. जयकुमार जैन (मुजफ्फरनगर) एवं महामन्त्री कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन (बुरहानपुर) के नेतृत्व में अर्द्धशताधिक विद्वानों ने सहभागिता की। इन विद्वानों के नाम इस प्रकार हैं–

1. प्रो. रमेशचन्द जैन, श्रवणबेलगोला
2. डॉ. जयकुमार जैन, मुजफ्फरनगर
3. प्रो. रतनचन्द जैन, भोपाल
4. डॉ. सुदर्शनलाल जैन, जयपुर
5. डॉ. शीतलचन्द जैन, जयपुर
6. पं. मूलचन्द लुहाड़िया, मदनगंज–किशनगढ़
7. पं. रतनलाल बैनाड़ा, आगरा
8. प्रो. वृषभप्रसाद जैन, लखनऊ
9. प्रो. अशोककुमार जैन, वाराणसी
10. डॉ. कपूरचन्द जैन, खतौली
11. प्रो. विजयकुमार जैन, लखनऊ
12. प्रा. अभयकुमार जैन, बीना
13. प्रा. अरुणकुमार जैन, जयपुर
14. डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन, बुरहानपुर
15. डॉ. सुमतकुमार जैन, जयपुर
16. डॉ. आनन्दकुमार जैन, जयपुर
17. डॉ. पंकजकुमार जैन, भोपाल
18. डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज', इन्दौर
19. पं. लालचन्द जैन 'राकेश', भोपाल
20. डॉ. कमलेशकुमार जैन, जयपुर
21. पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस
22. डॉ. आलोक जैन, नई दिल्ली
23 पं. सुखदेव जैन, सागर
24. डॉ. संजय जैन, सागर
25. डॉ. ज्योति जैन, खतौली
26. डॉ. सन्तोषकुमार जैन, सीकर
27. प्रा. महेन्द्रकुमार जैन, मुरैना
28. डॉ. ब्र. धर्मेन्द्र जैन, जयपुर
29. डॉ. आराधना जैन, गंजबासौदा
30. डॉ. मनोरमा जैन, भोपाल
31. डॉ. मंजु जैन, अमेरिका
32. ब्र. प्रदीप 'सुयश', अशोकनगर
33. ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर
34. पं. संजीवकुमार जैन, महरौनी
35. पं. शैलेष शास्त्री, मदनगंज–किशनगढ़
36. डॉ. सुनील 'संचय', ललितपुर
37. पं. अशोक जैन शास्त्री, इन्दौर
38. पं. मुकेशकुमार जैन, ललितपुर
39. पं. नवीनकुमार जैन, ललितपुर
40. पं. आलोक मोदी, ललितपुर
41. पं. सोनल शास्त्री, नई दिल्ली
42. पं. शोभालाल जैन, ककरवाहा
43. डॉ. आशीष आचार्य, राहतगढ़
44. पं. आनन्दकुमार जैन, सांगानेर
45. श्रीमती चमेली जैन, भोपाल
46. पं. आनन्दकुमार जैन, बार
47. पं. राजेश जैन, ललितपुर
48. श्रीमती सन्ध्या जैन, लखनऊ
49. श्रीमती सरोज जैन, इन्दौर
50. पं. सुरेन्द्र कुमार जैन, इन्दौर

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुम्बई के स. सिं. सुधीर जैन, कटनी– अध्यक्ष,श्री अशोक पाटनी, मदनगंज–किशनगढ़– सरंक्षक, श्री पंकज जैन, नई दिल्ली– महामन्त्री,श्री प्रभात जैन, मुम्बई– पूर्व कोषाध्यक्ष,श्री खुशाल जैन,

सभी तीर्थ हमें आत्मोन्नति की प्रेरणा देते हैं।

विदिशा में सम्पन्न तत्त्वचर्चा संगोष्ठी के दृश्य

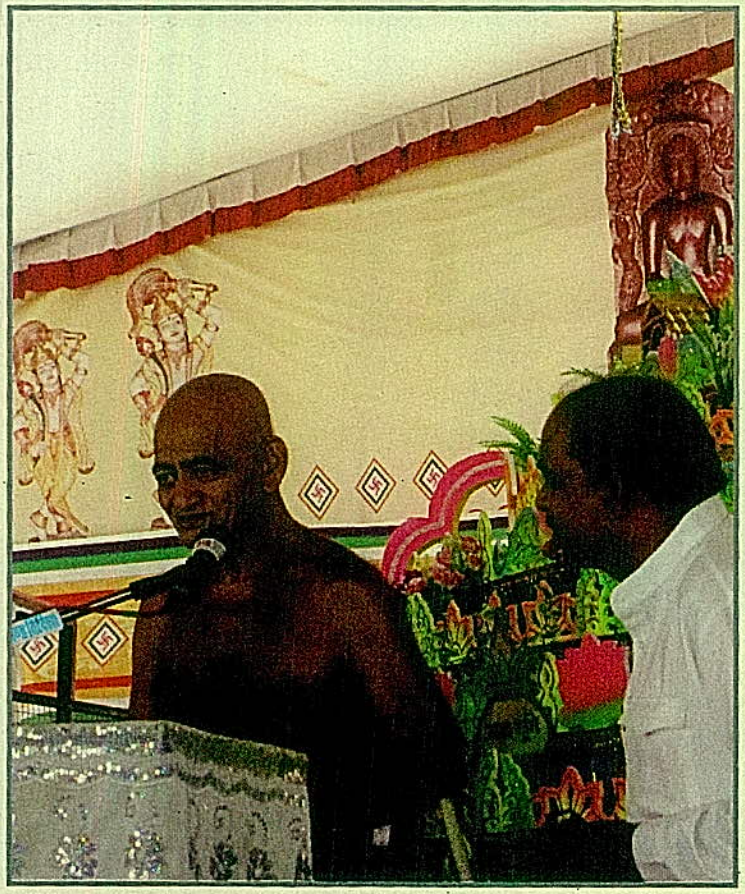

मुम्बई,श्री संजय मैक्स, इन्दौर– संयोजक निर्माण समिति, श्री सिं. सुन्दरलाल जैन, इन्दौर आदि पदाधिकारियों/सदस्यों ने सहभागिता की।

तत्त्वचर्चा संगोष्ठी का शुभारंभ श्री आदिनाथ भगवान् (बर्रो वाले बाबा) एवं आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज के चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्वलन के साथ जैन गौरव श्री अशोक पाटनी, श्री प्रभात जैन, मुम्बई, डॉ. जयकुमार जैन द्वारा किया गया। पं. लालचन्द जैन 'राकेश; के द्वारा मंगलाचरण से हुआ। तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारियों एवं समस्त विद्वानों के साथ उपस्थित ब्र. भाईयों एवं बहिनों तथा समाजजनों ने अपने स्थान पर खड़े होकर नमोस्तु निवेदन के साथ श्रीफल अर्पण कर तत्त्वचर्चा संगोष्ठी में सान्निध्य प्रदान कर सम्बोधन हेतु निवेदन किया; जिस पर परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने अपनी मोहक मुस्कान के साथ हाथ उठाकर शुभाशीष प्रदान किया। संगोष्ठी का संयोजन/ संचालन कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन (महामन्त्री–विद्वत्परिषद्) ने किया।

संगोष्ठी की प्रस्तावना में विद्वत्परिषद् के अध्यक्ष–डॉ. जयकुमार जैन ने कहा कि आज यह हमारा सौभाग्य है कि हम सब विद्वान् वरिष्ठतम आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की सन्निधि में ज्ञानपिपासु/जिज्ञासु बनकर आये हैं। हमें विश्वास है कि आचार्य श्री के द्वारा तत्त्वप्रबोधन पाकर हम सब लाभान्वित होंगे तथा कतिपय तत्त्वों द्वारा जिनधर्म, जैन तीर्थ जीर्णोद्धार आदि के विषय में फैलायी जा रही भ्रांतियों का निरसन होगा।

दि. 6/11/2014 को प्रथम सत्र में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने तृतीय एवं चतुर्थ गुणस्थान पर चर्चा प्रारंभ की।

हिंसा से लड़ें

आचार्य श्री ने कहा कि हमारा लक्ष्य हिंसा से लड़ना है। यह बहुत विवेकपूर्ण है। तीर्थंकर भगवान् की दिव्यध्वनि में उपदिष्ट दो धाराएं हैं– 1. श्रावकधारा, 2. श्रमणधारा। जब तक श्रावकधारा चलती है तब तक वीतरागता नहीं आती। श्रमणधारा में वीतरागता ही वीतरागता की धारा है। सरागता कमजोरी का नाम है, वीतरागता बलजोरी का नाम है। अभी संयोजक ने कहा कि हमें क्रोध नहीं आता। क्यों नहीं आता? मुझे तो बहुत क्रोध आता है किन्तु हमें क्रोध का बोध भी है। क्रोध किस पर करना चाहिए; यह हमेशा सीखो। ज्यादा बोलना नहीं, हमें तो काम करना है। आप लोग अहिंसक होकर भी हिंसा से क्यों नहीं लड़ रहे; यह आश्चर्य की बात है। भगवान् ने कहा कि लड़ना सीखो। किससे और कैसे ? इसका उत्तर है हिंसा से और अहिंसक तरीके से।

तीर्थंकर भगवान् महावीर को 66 दिन लग गये क्योंकि दिव्यध्वनि ग्रहण करने वाला कोई गणधर नहीं था। यहाँ विद्वान् आये इसलिए वाणी नहीं खिर रही है क्योंकि यहाँ संघ पहले से विराजमान है। धारा दो ही हैं, मिश्र धारा नहीं है। जो लक्ष्य बना लेता है वह समवशरण में श्रावक बनकर सुनने आ जाता है। हिंसा से लड़ने के लिए कमर कसो। आचार्य श्री हास्य में कहा कि धोती वाले कमर कस सकते हैं। पेन्टवालो! तुम बैल्ट कसो। उन्होंने हाइकु सुनाया कि–

वीर रस आता
कमर कसो
क्यों डरता है ?

चरणों का उपयोग करो

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने कहा कि आज यह कैसी विडम्बना है कि मनुष्य चतुर्थगुणस्थान जिसका नाम अविरत सम्यक्त्व गुणस्थान है; उसे पाकर अपने आपको धन्य मानने लगा है ? अविरत शब्द क्या कह रहा है ? इस पर वे लोग विचार क्यों नहीं करते ? अविरत शब्द ही बता रहा है कि आप के जीवन में असंयम है, व्रतों का अभाव है। अरे भाई, कुर्सी पर बैठो तो अधर में पैर लटकाते रहोगे। इन चरणों का उपयोग करो। मान को स्तम्भित करने का नाम मानस्तम्भ है। इन्द्रभूति गौतम का मानस्तम्भ देखते ही मान स्तम्भित हो गया था। वह भगवान् महावीर की शरण में चला गया और भगवान् महावीर के बाद उसने भी मोक्ष पा लिया। संसार में संघर्ष के कारण क्रोध, मान, माया, लोभ और इनसे उत्पन्न राग–द्वेष हैं। संसार में संघर्ष इन्हीं के कारण है। मैं बैठता नहीं, बैठने के बाद भी खड़ा रहता हूँ। मैं श्रमण हूँ, मुझे चलना है। चलने के लिए प्रतीक्षा जरूरी नहीं।

प्रवचन की भरमार

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने कहा कि आज प्रवचनों की इतनी भरमार है कि कोई सुनता नहीं। प्रवचन देना अच्छा है किन्तु यह कोई कल्याणक नहीं है। आज प्रवचन बहुत हो रहे हैं किन्तु आगम और तत्त्व की बात कम ही होती है।

अपनी भाषा की आवश्यकता

आज हमारे देश में लोग विदेशी भाषा में बोलचाल, अध्ययन और व्यवहार को गौरव मानने लगे हैं। इससे देश का गौरव और देश की संस्कृति का गौरव कम हो रहा है। यह चिन्ता की बात है। हम भले ही विदेशी भाषा को जाने किन्तु इस का

विदिशा में सम्पन्न तत्त्वचर्चा संगोष्ठी के दृश्य

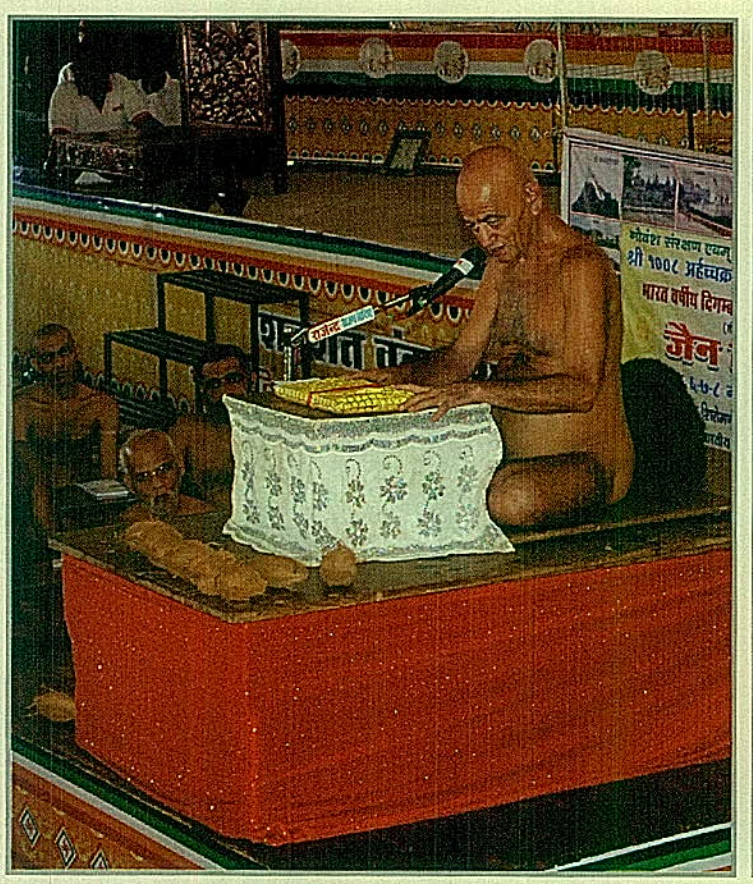

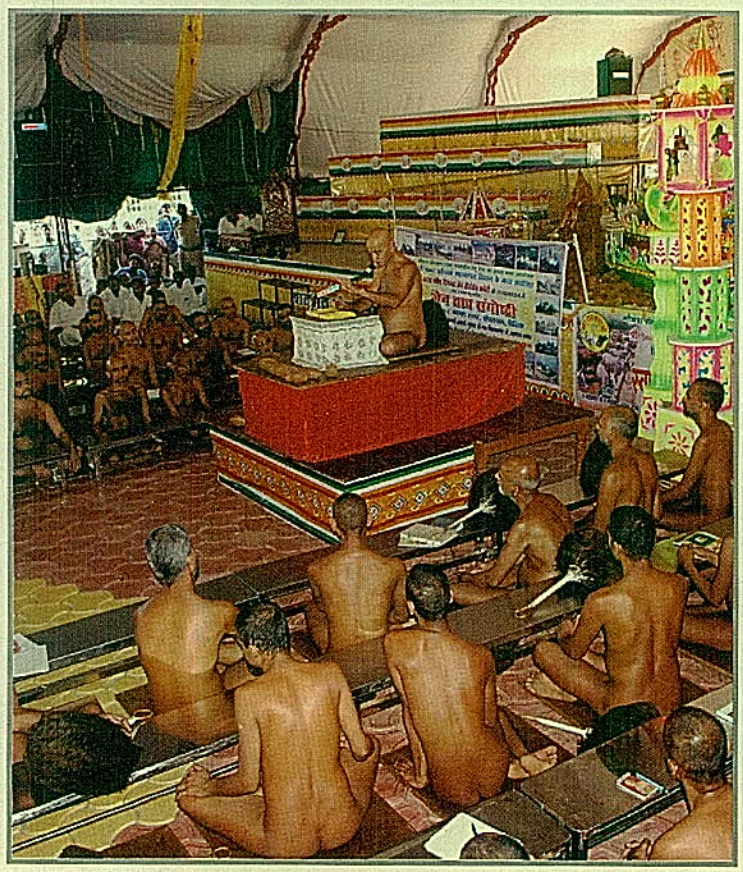

दाह का शमन, तृष्णा का नाश और मल को धोने वाला द्रव्य तीर्थ है।

उद्देश्य विदेशियों से व्यवहार के लिए होना चाहिए। हम अपने लोगों से अपनी ही भाषा में बात करें। आचार्य श्री ने कहा कि आपके पूर्वजों ने जो आपका नाम रखा है क्या आप उसे मिटा देंगे ? यदि कोई उसे मिटाने का प्रयास करें तो क्या आप उसे मिटाने देंगे? उन्होंने कहा कि जैसे नाम के साथ उपनाम जोड़ लेते हैं तो उसकी भी रक्षा करते हैं। अगर आप भारतीय हैं तो आपकी बोलचाल में अंग्रेजी का एक भी शब्द नहीं आना चाहिए। आज राष्ट्रभाषा हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के पक्ष में खड़े होने की आवश्यकता है।

42वां आचार्य पदारोहण दिवस

तत्त्वचर्चा संगोष्ठी के अंतिम दिन आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का 42वां आचार्य पदारोहण दिवस–अगहन कृष्ण द्वितीया (वि.सं. 2029) मनाने का सुअवसर विद्वानों तथा समाज को प्राप्त हुआ। विद्वानों के निवेदन करने पर भी आचार्य श्री स्वयं तत्त्वचर्चा संगोष्ठी के निर्धारित समय से पूर्व सभागार में नहीं आये अतः निर्धारित समय से आधा घण्टे पूर्व विनयांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस सभा में मुनि श्री समयसागर जी महाराज, मुनिश्री योगसागर जी महाराज, मुनिश्री प्रसादसागर जी महाराज, मुनिश्री प्रशस्तसागर जी महाराज, मुनिश्री संभवसागर जी महाराज सहित समस्त मुनिगण विराजमान हुए। विनयांजलि सभा में प्रो. रमेशचन्द जैन, प्रो. जयकुमार जैन, प्रो. वृषभप्रसाद जैन, प्रा. अरुणकुमार जैन, सिं सुधीर जैन (अध्यक्ष–तीर्थक्षेत्र कमेटी)ने आचार्य श्री के प्रति विनयांजलि व्यक्त करते हुए उन्हें आदर्श सन्त, आदर्श शिष्य, आदर्श आचार्य, आदर्श श्रमणचर्या के संवाहक, आदर्श लेखक, आदर्श उपदेष्टा, आदर्श तीर्थ जीर्णोद्धारक, आदर्श नवतीर्थ स्थापना के प्रेरक, प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी, कन्नडआदि के पुरस्कर्ता, संस्कृति संरक्षक बताया। निर्धारित समय पर आचार्य श्री के सभागार में पधारते ही समस्त विद्वानों, तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारियों, व्रतियों, समाज ने अपने स्थान पर खड़े होकर त्रिबार नमोस्तु निवेदित किया और आचार्य श्री जयवन्त हों के नारों से आकाश को गुंजायमान किया। सभा संचालक कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन के द्वारा आचार्य श्री से यह निवेदन करने पर कि आप 42 वर्ष पूर्व आचार्य पद ग्रहण करते समय की स्मृतियों पर प्रकाश डालें; इस पर आचार्य श्री ने कहा कि गुरु के उपकार को भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने हमें जो दिया वह रत्नत्रय हम सब के लिए आज भी उपादेय हैं। आचार्य श्री 'दयादमत्यागसमाधिनिष्ठं' श्लोक उच्चारण करते हुए इसकी व्यापक व्याख्या की और कहा कि कारण और कार्य की व्यवस्था सर्वप्रथम आचार्य समन्तभद्र ने बतायी। हमारे गुरुवर आचार्य श्री ने हमें आशीर्वाद दिया था कि संघ को गुरुकुल बना देना। कुल कहाँ बनेगा; इसकी चिन्ता मत करना। लक्ष्य अच्छा होगा तो पैर अपने आप उस ओर चलते चले जायेंगे। जिधर भक्ति होगी उधर पैर पड़ेंगे। तीर्थंकर आदिनाथ की चर्या कहाँ हुई ? हस्तिनापुर में। श्रमणों को निमंत्रण देना बहुत कठिन है, वे मानेंगे नहीं। आपको भी मानना नहीं है। होगा तो वही जो पुण्य में होगा, जिसका पुण्यतेज होगा। हे भगवन् आपका तीर्थ अद्वितीय है क्योंकि इसमें दया है, संयम है, त्याग है, समाधि है और यह तीनों हैं तो मोक्ष भी है। आचार्य श्री ने अपना यह हाइकू सुनाया कि–

मन का काम मत करो
मन से काम लो
मोक्ष सामने है

भगवान् महावीर के तीर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होगा इसलिए वह अद्वितीय है।

नई देशना की आवश्यकता नहीं

परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने कहा कि हमारे लिए जो परम्परागत आगम प्राप्त हुआ है वही हमारे लिए तीर्थंकर भगवान् की देशना है। और जब पूर्व से ही इतनी देशना उपलब्ध है तो अन्य किसी देशना की आवश्यकता नहीं।

गणधरवाणी के संकलन की आवश्यकता नहीं

परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने कहा कि हमारे लिए जो द्रव्य श्रुत मिला है वह तीर्थंकर की वाणी के रूप में हम सब के लिए उपादेय है। हमें वही ग्रहण करना चाहिए। अन्य किसी गणधर वाणी के संकलन की आवश्यकता नहीं। 20–25 वर्ष पूर्व भी द्वादशांग वाणी के संकलन का प्रयास किया गया था उस समय भी विरोध हुआ था। साधु के लिए आगम ही नेत्र हैं, उसी से देखें।

तीर्थ जीर्णोद्धार एवं नए तीर्थों की आवश्यकता

परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने कहा कि जैन संस्कृति में जिनबिम्ब, जिन मन्दिर, सिद्ध एवं अतिशय क्षेत्र, चलते–फिरते तीर्थ– श्रमण महत्त्वपूर्ण हैं। हम सबके लिए पूज्य हैं। आगम को भी तीर्थ कहा गया है। तीर्थ वीतरागता की ओर ले जाने वाले हैं। दो स्थितियां हैं– 1. दर्पण तो देखो, 2. दर्पण में देखो। यह तीर्थ हमारे झलकन के लिए हैं। तीर्थ को बचाओ। जिनबिम्बों की सुरक्षा करो। श्रमण चलते–फिरते तीर्थ

धर्म किसी दुकान पर नहीं मिलता जो पैसे से खरीदा जाये।

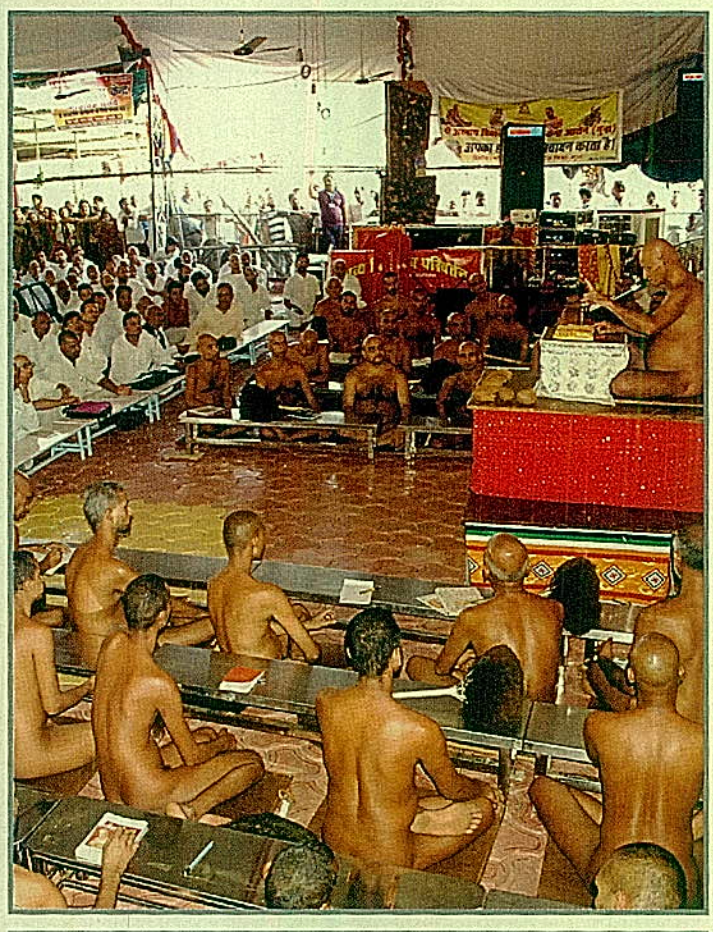

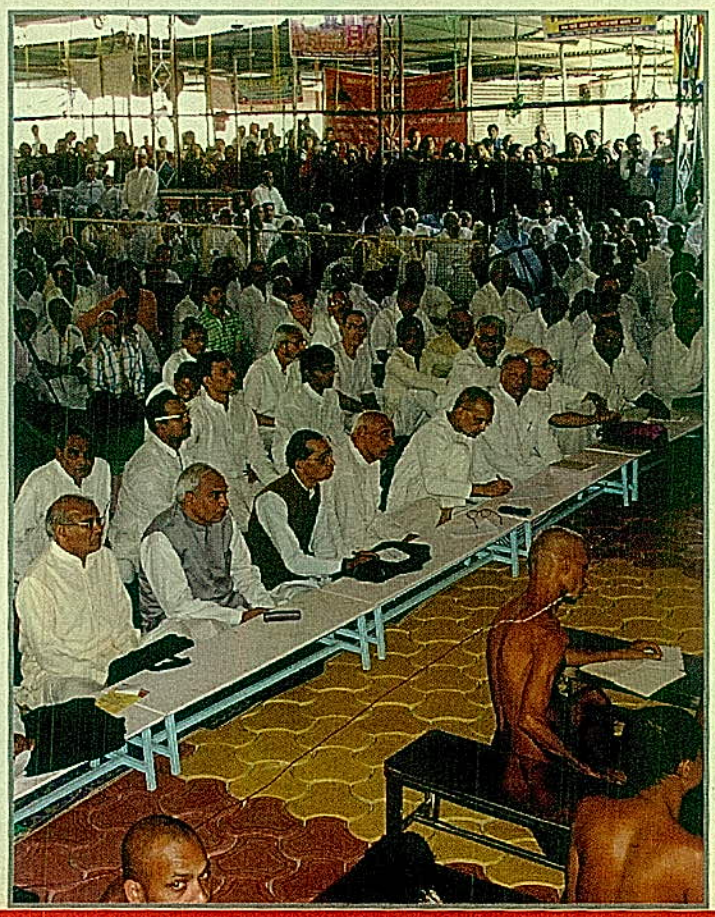

हैं। आपके आंगन तक आ जाते हैं। आपको जगाते हैं। इनकी सुरक्षा हेतु निरंतर पुरुषार्थ करना चाहिए।

स्वराज और भारत पुस्तक का विमोचन

तत्त्वचर्चा संगोष्ठी के मध्य दि. 8 नवम्बर को परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य एवं विद्वानों की उपस्थिति में स्वराज और भारत कृति का विमोचन स.सिं. सुधीर जैन, कटनी– अध्यक्ष,श्री अशोक पाटनी, मदनगंज–किशनगढ़– सरंक्षक, श्री पंकज जैन, नई दिल्ली– महामन्त्री,श्री प्रभात जैन, मुम्बई, पं. रतनलाल बैनाड़ा, पं. मूलचन्द लुहाड़िया, डॉ. रमेशचन्द जैन, डॉ. जयकुमार जैन द्वारा किया गया । इस कृति में नेमावर में श्रीमती सुषमा स्वराज (वर्तमान विदेश मन्त्री) के आगमन पर आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने जो सम्बोधन दिया था; उस प्रवचन का प्रका किया गया है। इस कृति का सम्पादन मुनिश्री अजितसागर जी महाराज के द्वारा 'स्वराज और भारत' नाम से किया गया। इसमें श्रीमती सुषमा स्वराज का वक्तव्य भी है। अहिंसा और अपनी संस्कृति, अपनी भाषा के उन्नयन हेतु यह कृति अत्यन्त उपयोगी है।

आभार

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष सिं. सुधीर जैन, पूर्व कोषाध्यक्ष श्री प्रभात जैन, प्रतिष्ठाचार्य ब्र. श्री प्रदीप जैन 'सुयश', श्री अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद् के अध्यक्ष डॉ. जयकुमार जैन, महामन्त्री कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन के निवेदन पर परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के शुभाशीर्वाद से शीतलधाम,विदिशा में मात्र 5 दिन में तत्त्वचर्चा संगोष्ठी की रूपरेखा बनी, फोन सम्पर्क से ही विद्वानों ने अ सहभागिता की स्वीकृति दी और यह तत्त्वचर्चा संगोष्ठी अतिशय रूप से सफल हुई। इस हेतु सभी ने आचार्य श्री के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष सिं. सुधीर जैन, पूर्व कोषाध्यक्ष श्री प्रभात जैन ने तीनों दिन उपस्थित रहकर आयोजन को सफल बनाया। शीतलधाम प्रबंध समिति, दयोदय महासंघ समिति, श्री सुरेन्द्र जैन, गंजबासौदा, श्री रत्नेश जैन आदि ने जो व्यवस्था में सहयोग प्रदान किया वह सराहनीय है। सभी पक्ष साधुवाद के पात्र हैं।

उक्त तत्त्वचर्चा संगोष्ठी का सफल संचालन कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन ने किया। उक्त संगोष्ठी में आचार्य श्री के प्रवचनांशों का आगामी अंक में भी प्रकाशन किया जायेगा।

अहिंसा सब धर्मों में श्रेष्ठ है। हिंसा के पीछे सब प्रकार के पाप लगे रहते हैं (तिरुवल्लूर)

मूकमाटी : प्रशासनिक एवं न्यायिक दृष्टि

– सुरेश जैन (आई.ए.एस.) भोपाल, मोबाईल 9425010111

आचार्य विद्यासागर जी द्वारा विरचित महाकाव्य **मूकमाटी** भारतीय संस्कृति की महत्वपूर्ण धरोहर है। लेखक ने नैनागिरि की सिद्ध शिला पर विराजमान आचार्य श्री विद्यासागर जी के मधुर कण्ठ से इस महाकाव्य की अनेक पंक्तियॉ सुनने का अनुपम सौभाग्य प्राप्त किया है।

यह मूकमाटी प्रत्येक मानव को संजीवनी शक्ति प्रदान करती हुई अपनी उत्कृष्ट वैचारिक क्रान्ति द्वारा युगीन जीवनादर्षो की स्थापना करती है। पिसनहारी की मढ़िया में आरम्भ हुई, यह **मूकमाटी** विष्व के प्रत्येक प्राणी को विकास के समान एवं समुचित अवसर उपलब्ध कराती है और प्रकाश स्तंभ की भॉति उसे उत्कर्ष के सर्वोच्च शिखर का पथ प्रशस्त करती है।

मानवीय धर्म के बिना राजनीति, न्यायपालिका और कार्यपालिका पंगु होती है क्योंकि प्रत्येक व्यवस्था मानव को केन्द्र में रखकर ही निर्मित की जाती है। व्यवस्था का यह त्रिकोण समाज का आधारभूत एवं महत्वपूर्ण अंग है। आज राजनीतिक, न्यायिक एवं प्रषासकीय पंगुता अपनी षिखर पर है। हमें अपने राजनीतिज्ञों, न्यायविदों एवं प्रषासकों में मानवीयता के शाष्वत् मूल्य स्थापित करना आवष्यक है जिससे ऊँचे पद पर बैठकर उन्हें अपने बंधु/बॉधवों एवं सामान्य व्यक्ति के साथ मानवीय व्यवहार करने में हीनता की भावना न हों। यदि राजनीतिज्ञ, न्यायविद और प्रषासक आचार्य श्री के चारित्रिक – साहित्यिक अवदान का शतांष भी अपने जीवन में उतार लें तो वे और हम लौकिक एवं आध्यात्मिक सम्पन्नता के सर्वोच्च षिखर पर पहुँच सकते हैं।

प्रत्येक प्रशासनिक इकाई के सर्वांगीण विकास में संलग्न प्रशासकों के उत्थान के लिए अहंकार शून्यता एवं ऐन्द्रिक संयम की अवधारणा मूकमाटी की इन पंक्तियों में साकार हो उठती है :–

विकास के कम तब उठते हैं,
जब मति साथ देती है,
जो मान से विमुख होती है,
और
विनाश के कम तब जुटते है,
जब रति साथ देती है,
जो मान से प्रमुख होती है।
उत्थान–पतन का यही आमुख है।

प्रशासकों एवं न्यायिक अधिकारियों से रचनाकार ने महती अपेक्षा की है कि वे सिंह वृत्ति अपनायें। मानवीय हितों के विपरीत सिद्धान्त विमुख होकर कोई समझौता न करें। मायाचार एवं कृत्रिम आडंबरों से स्वयं को अलग रखेकर सदैव विवेकपूर्ण निर्णय लेकर समाज में उच्च कोटि के प्रशासनिक एवं न्यायिक मानदण्ड स्थापित करें। यथा संत कवि ने इन पंक्तियों में अभिव्यक्त किया है :–

पीछे से कभी किसी पर
धावा नहीं बोलता सिंह,
गरज के बिना गरजता भी नहीं,
और/बिना गरजे/किसी पर बरसता भी नहीं –
यानी मायाचार से दूर रहता है सिंह
सिंह विवेक से काम लेता है,
सही कारण की ओर ही
सदा दृष्टि जाती है सिंह की।

अधिकॉश न्यायिक एवं प्रशासनिक अधिकारी अपने शारीरिक सुख, पदोन्नति एवं वेतनवृद्धि के चिंतन में अहर्निष संलग्न रहते है। उनके लिए निम्नॉकित पंक्तियॉ वास्तविक जीवन लक्ष्य निर्धारित करने की प्रेरणा देती है :–

भोग पड़े है यहीं/भोगी चला गया,
योग पडे है यही/योगी चला गया,
कौन किसके लिए/धन जीवन के लिए,
या जीवन धन के लिए
मूल्य किसका/तन का या वेतन का,
जड़ का या चेतन का

प्रत्येक अधिकारी को पुरूषार्थ एवं परिश्रम की प्रेरणा देते हुए पुरूषार्थ एवं परिश्रम के जीवंत शीर्ष पुरूष करते है :–

बाहुबल मिला है तुम्हें, करो पुरूषार्थ सही,

पुरूष की पहचान करो सही,
परिश्रम के बिना तुम,
नवनीत का गोला निगलो भले ही,
कभी पचेगा नहीं वह,
प्रत्युत जीवन को खतरा है।

न्यायिक–प्रशासनिक अधिकारी का यह कर्तव्य है कि वह सही व्यक्ति पर अनुग्रह करें एवं समाज विरोधी आचरण को नियंत्रित करें :–

शिष्टों पर अनुग्रह करना,
सहज प्राप्त शक्ति का,
सदुपयोग करना है धर्म है।
और दुष्टो का निग्रह नहीं करना,
शक्ति का दुरूपयोग करना है, अधर्म है।

राज्य शासन द्वारा अपने अधीनस्थ अल्प वेतन भोगी कर्मचारियों की पर्याप्त वेतन एवं सुविधाऐं दी जावे और उन्हें विकास के अवसर उपलब्ध कराये जावे। इन सिद्धान्तो का चित्राण निम्नॉकित पंक्तियों में उत्कृष्ट ढंग से किया गया है :–

थोड़ी सी / तन की भी चिन्ता होनी चाहिए,
तन के अनुरूप वेतन अनिवार्य है,
मन के अनुरूप विश्राम भी।
मात्रा दमन की प्रक्रिया से,
कोई भी क्रिया, फलवती नहीं होती है,

शासन का महत्वपूर्ण कार्यक्रम है अल्प वचत के लिए प्रोत्साहन। आचार्य श्री यह तथ्य इन पंक्तियों में इस प्रकार पुष्ट करते है :–

धन का मितव्यय करो,
अति व्यय नहीं,
अपव्यय तो कभी नहीं,
भूलकर स्वप्न में भी नहीं।

देश तथा प्रदेश में फैलता हुआ आतंक सामान्य जन की सतत उपेक्षा, उपहास, शोषण और अपमान का परिणाम है। यह स्थापित करते हुए आचार्य श्री नीति–निर्धारकों को महत्वपूर्ण मार्गदर्शन देते हुए कहते है कि :–

मान को टीस पहुँचने से ही,
आतंकवाद का अवतार होता है।
अति पोषण और अति–षोषण का भी
यही परिणाम होता है तब
जीवन का लक्ष्य बनता है, शोध नहीं,
बदले का भाव प्रतिशोध।
जो कि महा अज्ञानता है,
दूरदर्शिता का अभाव,
पर के लिए नहीं,
अपने लिए भी घातक।
नहीं–नहीं–नहीं / अभी लौटना नहीं।
अभी नहीं – कभी भी नहीं,
क्योंकि अभी / आतंकवाद गया नहीं,
उससे संघर्ष करना है अभी
वह कृत संकल्प है / अपने ध्रुव पर दृढ़।
जब तक जीवित है आतंकवाद
शक्ति का श्वास ले नहीं सकती / धरती यह,
ये ऑखें अब / आतंकवाद को देख नहीं सकती
ये कान अब / आतंक का नाम सुन नहीं सकते,
यह जीवन की कृत संकल्पित है कि
उसका रहे या इसका
यहॉ अस्तित्व एक का रहेगा।

आइये हम आचार्य श्री के दर्शन कर संत / संयत बनाने की प्रेरणा लें तथा यथा उपलब्ध में सुखानुभूति करते हुए विकास के पथ पर आगे बढ़े :–

संत समागम की यही तो सार्थकता है,
संसार का अन्त दिखने लगता है,
समागम करने वाला भले ही,
तुरन्त संत संयत / बने या न बने
इसमें कोई नियम नहीं है / किन्तु वह
संतोशी अवश्य बनता है।
सही दिशा का प्रसाद ही
सही दशा का प्रासाद है।

दण्ड संहिता का प्रमुख लक्ष्य अपराधी की उद्दण्डता का दूर करना है, उसे कूरता से दण्डित करना नहीं है। वे कॉटो को काटने की नहीं बल्कि उनके घावों को सहलाने की हमें शिक्षा देते है। वे पापी से नहीं पाप से, पंकज से नहीं पंक से घृणा करने की हमें सीख देते हैं :–

प्राण दण्ड से । औरो को तो शिक्षा मिलती है,
परन्तु। जिसे दण्ड दिया जा रहा है,

उसकी उन्नति का अवसर ही समाप्त।
दण्ड संहिता इसको माने या न माने
क्रूर अपराधी को,
क्रूरता से दण्डित करना भी
एक अपराध है, न्याय मार्ग से स्खलित होना है।

न्याय शास्त्रों का यह सर्वमान्य सिद्धान्त है कि चोरी करने वाला तथा चोरी की प्रेरणा देने वाला समान रूप से दोषी है। आचार्य श्री इस सिद्धान्त से भी आगे बढ़कर उद्घोष करते हैं कि चोर को चोरी करने की प्रेरणा देने वाला व्यक्ति चोर से अधिक दोषी है :–

चोर इतने पापी नहीं होते,
जितने की चोरों को पैदा करने वाले।

राजनीति, प्रशासन और न्यायपालिका राज्य शक्ति के महत्वपूर्ण स्तंभ है। इन शक्ति स्तंभो के विभिन्न पदों पर पदस्थ व्यक्तियों को इन पदो पर सदैव बने रहने की तृष्णा घेर लेती है। यह तृष्णा अत्यधिक कष्टदायक होती है। इस पद लिप्सा एवं प्रशासनिक न्यायिक अधिकारी की अंतिम आकांक्षा को स्पष्ट करते हुए वे कहते है :–

जितने भी पद हैं,
वह विपदाओं के आस्पद हैं,
पद लिप्सा का विषधर वह
भविष्य में भी हमें न सूँघे,
बस यही कामना है, विभो।

अरिहंत और जनसंत से हमारी यही याचना है कि वे हमें ऐसा विवेक दे कि हम राष्ट्र के उत्थान में सदैव संलग्न रहकर निम्नांकित पंक्तियों को अपने शेष जीवनकाल में तन–मन से गुनगुनाते रहे :–

धरती की प्रतिष्ठा बनी रहे,
और
हम सबकी,
धरती में निष्ठा घनी रहे बस।

यह जानकर सभी पाठको को प्रसन्नता होगी कि इस लेखक के प्रयास से बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय ने एम.ए. की हिन्दी परीक्षाओं के लिए इसे संदर्भ पुस्तक के रूप में गत वर्ष स्वीकृत कर लिया है। आचार्य श्री का चातुर्मास विदिशा में चल रहा है। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह जी ने मूकमाटी से प्रभावित होकर यह घोषणा की है कि यह पुस्तक मध्यप्रदेश में स्थित अन्य सभी विश्वविद्यालयों में पाठ्यपुस्तक के रूप में स्वीकृत की जावे। पाठको से विनम्र निवेदन है कि अपने अपने प्रदेश के विश्वविद्यालयों में मूकमाटी को पाठ्यपुस्तक के रूप में सम्मिलित कराने के लिए ठोस प्रयास करें। इसकी प्रक्रिया की जानकारी यह लेखक सदैव देने के लिए सहमत है।

गांधी से गांधी तक

महाकवि श्री योगेन्द्र दिवाकर, सतना

गांधी से गांधी तक, कत्ले आम हुआ।
खून पी गया माँ का जो शैतान हुआ ॥
पूछ रही है आजादी लोगों से-
कुदरत की चौखट पर किसका खून पड़ा ॥
हिंसा की आंधी से कैसा पतन हुआ।
बसती जाती बस्ती में कुहराम हुआ ॥
राम, कृष्ण, महावीर, इलाही को लाओ।
जिनसे सारी दुनिया का उत्थान हुआ ॥
महावीर की जन्मभूमि वैशाली आओ।
उदय तीर्थ का जहाँ परम निर्माण हुआ ॥
विश्व शांति के लिये अहिंसा धर्म है।
धर्म बिना ही दानवता का काम हुआ ॥

अरिहंत, सिद्ध भक्ति

पानी से पेट भरा जा सकता
पर भूख नहीं मिटती है।
बिना अरिहंत, सिद्ध भक्ति के
आत्मा, शुद्ध नहीं होती है ॥
अरिहंत अरिहंता अरिहंतो,
सिद्ध सिद्धा सिद्धो सिद्धे सिद्धा।
अरिहंताय अरिहंताओ,
अरिहंत अरिहंता, सिद्ध सिद्धा ॥
अरिहंत, सिद्ध भक्ति असीम,
अनुपम ज्योतिर्मयी समीचीन।
अनंत शीर्ष अरिहंत, सिद्ध,
पूजित परमात्मा परमलीन ॥

जिसमें जिनदेव विराजमान हैं, वह तीर्थ है (उत्तरपुराण 54, 5)

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी दीपावली मेला - 2014 सानन्द सम्पन्न

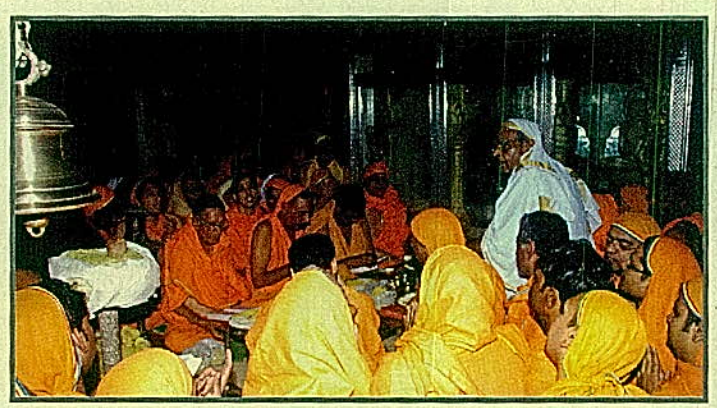

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी में दीपावली मेला-2014 के अवसर पर विश्ववंद्य भगवान महावीर के 2541वें निर्वाण दिवस के पूर्व दिन दिनांक 22 अक्टूबर, 2014 को प्रातः 8.30 बजे झण्डारोहण से कार्यक्रम का उद्घाटन हुआ। झण्डारोहणकर्ता अजमेर के श्री पदमकुमार जी काला व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती किरण देवी थे। आदर्श महिला महाविद्यालय, श्री महावीरजी की छात्राओं ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। क्षेत्र के मानद मंत्री श्री महेन्द्र कुमार पाटनी ने अतिथियों, यात्रियों व उपस्थित जन समुदाय का स्वागत किया तथा अतिथियों को माल्यार्पण व भगवान महावीर का चित्र भेंट किये। झण्डारोहण के पश्चात मानद मंत्री द्वारा क्षेत्र की प्रगति व गतिविधियों के बारे में जानकारी प्रदान की गई तथा दीपावली मेले के कार्यक्रम की जानकारी प्रदान की। तत्पश्चात कटले से बड़े बाबा तक जलयात्रा जुलूस में सभी महिला व पुरुषों ने भाग लिया। बड़े बाबा के 21 कलशों की बोली हुई। फिर यह जुलूस वापिस कटला आ गया और छात्र-छात्राओं को क्षेत्र की ओर से मोदक वितरित किये गये।

दोपहर में दिगम्बर जैन भक्ति संगीत मण्डल, श्री महावीरजी द्वारा साजों पर पूजन का आयोजन हुआ तथा उसके पश्चात जिनेन्द्र भगवान का पंचामृत अभिषेक का आयोजन हुआ। दिगम्बर जैन भक्ति संगीत मण्डल, श्री महावीरजी द्वारा रात्रि में साजों पर 108 दीपों से आरती की गई एवं तत्पश्चात भक्ति संध्या का आयोजन हुआ।

भगवान महावीर के निर्वाण दिवस पर कार्तिक बुदी अमावस तदनुसार दिनांक 23 अक्टूबर, 2014 को प्रातः 5.45 बजे मुख्य मंदिर की दोनों वेदियों पर तथा कटला पश्चिमी पाण्डाल में सामूहिक रूप से देव, शास्त्र, गुरु की पूजन व भगवान महावीर की पूजन की गई तथा निर्वाण काण्ड पढ़कर निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न प्रातों से पधारे हजारों यात्रियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर क्षेत्र के अध्यक्ष न्यायाधिपति श्री नरेन्द्र मोहनजी कासलीवाल, मानद मंत्री श्री महेन्द्र कुमार पाटनी, कोषाध्यक्ष श्री बलभद्रकुमार जी जैन एवं पूर्व अध्यक्ष श्री नरेश कुमार जी सेठी तथा भारतवर्षीय दिगम्बर जैन धर्म संरक्षिणी महासभा के अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी राजस्थान अंचल के पूर्व अध्यक्ष श्री अशोक जी नेता आदि भी उपस्थित थे। तीनों वेदियों पर निर्वाण लाडू चढ़ाकर गाजे-बाजे के साथ क्षेत्र के ट्रस्टीगण व यात्रीगण चरण छत्री पहुंचे और वहाँ निर्वाण लाडू चढ़ाया। तत्पश्चात मंदिर की समस्त वेदियों व मानस्तम्भ पर भी निर्वाण लाडू चढ़ाया।

श्री महावीर ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज

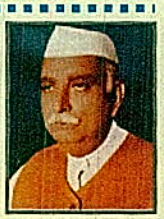

संस्थापक एवं निदेशक
दयाचन्द जैन (फ्रीडम फाईटर)
मो. 98141 75293

IN THE SERVICE OF NATION 1970 ESTD.

मैनेजिंग डायरेक्टर
राजेन्द्रकुमार जैन
मो. 98140 92613

जगराओ (पंजाब)	श्री गंगानगर (राजस्थान)	जम्मू (कश्मीर)	कोलकाता (बंगाल)
223191, 223103	2494412	2547876	98304 86979
222 093, 228962	2494413	2547239	99973 4272

देवालय में विराजित जिनदेव तीर्थ हैं - यह व्यवहार का कथन है (योगसार, दो. 4)

(43वें पदारोहण दिवस पर विशेष)

पू. मुनीन्द्र विद्यासागरजी को दिया आचार्य-पद चारित्र चक्रवर्ती आचार्य ज्ञानसागर जी ने

- श्री सुरेश जैन सरल, जबलपुर (म.प्र.)

देश के अठारह महान जैन संतों का जीवन-चरित्र लिखने वाले सरल जी की शैली से समस्त भारत के मुनिभक्त -पाठक परिचित हैं, अत: मैं प.पू.गुरुदेव आचार्य शिरोमणि 108 श्री विद्यासागरजी महाराज का, आज से 42 वर्ष पूर्व सम्पन्न किए गये पदारोहण समारोह का अनूठा दृश्य 'जैन तीर्थ वंदना' के सुधी-पाठकों को दिखलाना चाहता हूँ। पढ़ते समय आप अनुभव करेंगे कि देख रहे हैं।

- सुधीर जैन, अध्यक्ष

बहुत से युवकों को नहीं मालूम होगा कि 20 अक्टूबर, 1972 को सकल दिगम्बर जैन समाज नसीराबाद (राज.) ने तत्कालीनमहान समाजसेवी श्रीमंत भागचंदजी सोनी (सरसेठ) के प्राधान्य में प.पू.आचार्य 108 श्री ज्ञानसागरजी महाराज को 'चारित्र चक्रवर्ती' के अलंकरण से विभूषित किया था। किन्तु पू. आचार्यश्री उस यात्री (मुसाफिर) की तरह मन ही मन परेशान थे जिसके पास अनजाने ही लगेज बढ़ गया था। पहले ही आचार्य पद उन्हें परिग्रह लग रहा था; ऊपर से यह अलंकरण, अतः सोचने लगे -'मैं शीघ्र ही निःभार होना चाहता हूँ।'

'नसीराबाद का चातुर्मास जीवन का अंतिम चातुर्मास है', यह बात आचार्य ज्ञानसागरजी जान चुके थे, अतः वे तदनुसार मुनि विद्यासागर को तैयार कर रहे थे। मुनि को तैयार करने का अर्थ है कि बगैर आत्मपीड़ा पहुंचाये, अनुकूल विचारों पर चलने की मानसिकता शिष्य में निर्मित कर देना। सन् 1972 के वर्षायोग के बाद आगामी किसी भी वर्षायोग में पू. मुनि विद्यासागरजी को अपने आत्मस्वामी गुरु पूज्य ज्ञानसागरजी का संयोग नहीं मिलेगा, वे यह नहीं जानते थे, परन्तु उनके अस्वास्थ्य से मुन्योचित चिंता अवश्य करते रहते थे। ज्ञानसागरजी को दमा के साथ-साथ गठियावात के कष्ट तीव्रता से सता रहे थे। वे अपनी जीर्ण कार्या को रोज-रोज रोगों से लुटता-पिटता देख रहे थे। शरीर में अत्यधिक पीड़ा होने लगी थी। यों कष्ट वे सह रहे थे, पर वह श्रावकों से देखा नहीं जा रहा था। उनके हर जोड़ में दर्द समा गया था, घुटने में, टिहुनी में, कमर में, शरी के हर जोड़ में। जोड़ों की हर गठान में पीड़ा ही पीड़ा थी। उम्र 81 वर्ष की ओर कदम धर रही थी, परन्तु देह एक-एक कदम चलने में असमर्थता की मौन घोषणा ज्ञापित करती रहती थी।

शिष्योत्तम विद्यासागरजी अपने वयोवृद्ध-ज्ञानवृद्ध-तपवृद्ध गुरु की सेवा में कोई कसर नहीं छोड़ रहे थे। छाया की तरह हरक्षण उन्हीं के पास बने रहते थे। उनकी पीड़ा हरने का प्रयास करते, काश! उनके वश में होता। कभी पैर सहलाते, कभी सिर दबाते, कभी पीठ पर हाथ फेरते। गुरुवर उठते तो विद्यासागर जी स्वतः पकड़ कर उठाते, लेटते तो अपने हाथों लिटाते। जो जन देख रहे थे- सेवा का भाव और सेवा का क्रम, वे कहने लगते कि एक माता ही अपने शिशु की ऐसी सेवा कर सकती है। श्रेष्ठिवर्ग देखता तो कहते दस लाख रुपये देने पर भी कोई ऐसी आत्मीयता पूर्ण सेवा नहीं प्राप्त कर सकता, जो गुरुवर अपने प्रिय शिष्य से पा रहे हैं। सेवा भी एक दिन या एक सप्ताह नहीं, कई माहों से चल रही थी और आगे काफी समय तक चली।

चातुर्मास पूर्ण होने को था। श्रावकों की दृष्टि विद्यासागरजी के सेवाभाव पर हर्षित थी, जबकि पू. विद्यासागर जी कुछ पृथक दृष्टिकोण रखते थे। वे सोचते थे कि इन महान दानी, महान उपकारी गुरुवर ज्ञानसागरजी ने पिछले पांच वर्षों में मुझे जो कुछ भी अवदान दिया है उसके समक्ष मेरे द्वारा की गई टहल, सेवा, गुरुभक्ति आदि कुछ मायने नहीं रखती। मैं कभी उनके उपकार से उऋण नहीं हो सकता, चाहे अपने देहात्म को ही क्यों न होम डालूँ।

योग्य शिष्य के योग्य विचारों के समक्ष कोई तर्क उचित नहीं था। वे जो सोच रहे थे, वह यथार्थ के धरातल पर था। श्रावक जो सोच रहे थे- वह भावुकता के धरातल पर था। मगर सत्य दोनों सोचों में था।

चातुर्मास के बाद अक्सर विहार की स्थिति बनती है, पर नसीराबाद के चातुर्मास की विशेष-परिस्थितियों के कारण निष्ठापना के बाद भी विहार करने की इजाजत प्रकृति नहीं प्रदान कर रही थी। तब गुरुवर ने शरीर ढोने के बदले शरीर त्यागना ही उचित समझा। मगर उनके सामने समस्या यह थी कि नसीराबाद के आसपास किसी नगर में कोई आचार्य उस समय अवस्थित नहीं थे, जो थे, वे सैकड़ों मील दूर थे, जहाँ पैदल चल कर पहुंचना उनके दुर्बल शरीर के वश में नहीं था। गुरुवर सोच रहे थे कि जैनागम के अनुकूल, आचार्य भगवंत से मरण-समाधि की दीक्षा प्राप्त करूँ और शरीर के आश्रय का आधार छोड़ूँ।

इस बीच उनका चिंतन सही पात्र के पास पहुंच गया, कुछ क्षणों के बाद ही। उन्होंने विचार किया कि प्रिय शिष्य विद्यासागर को गत वर्षों में पारंगत कर दिया है। वह अब एक परमयोग्य दिगम्बर मुनि हैं। आगम निष्णात मुनि। मेरे बाद वह आचार्य होंगे ही, अतः क्यों न मैं स्वतः अपने अंतिम पाठ के रूप में वह पाठ भी उन्हें प्रदान करूँ और फिर उन्हीं का होकर समाधिक के लिये प्रवृत्त होऊँ। पूज्य ज्ञानसागरजी को अपना सोच सौ प्रतिशत उचित लगा। उन्हें लगा कि कई वर्षों से गुरुताओं का भार सिर पर धर कर चल रहा हूँ, देखूँ कि अब यह मन लघुता धारण करने में भी आगे बढ़ कर साथ देता है या नहीं। विद्यासागर की अंतिम-परीक्षा होगी आचार्य पद धारण करने में और मेरी अंतिम परीक्षा होगी

ज्ञान एक ऐसा धन है, जो मन को भी अपने वश में कर लेता है।

आचार्य पद त्याग करने में। मैं जो एक आचार्य हूँ, अपने ही शिष्य का निर्देशन पाऊँगा क्या? इस परीक्षा में भी मुझे उत्तीर्ण होना चाहिए। बड़े से लघु बनने की परीक्षा। सागर से बूँद हो जाने की परीक्षा।

दो तीन दिनों तक वयोवृद्ध ज्ञानसागरजी का विार मंथन मन ही मन चलता रहा, फिर एक दिन शिष्य से बोले- 'तू आचार्य पद के लायक हो गया है।'

वाक्य सुनकर मुनि विद्यासागर चकित हो गये, फिर बोले- अभी मुझे आचार्य पद नहीं चाहिए, अभी आपकी सेवा करने में धर्म का जो श्रेष्ठ आनंद पा रहा हूँ वह नहीं छोड़ना चाहता।

गुरुवर बोले- आचार्य बनने के बाद भी तू सेवा का धर्म पा सकता है।

- पर मुझे ऐसे ही जब वह मिल रहा है तो विकल्प में क्यों पड़ूँ?

- काहे का विकल्प, वह तो दायित्व है। इस पथ पर चलने की एक परीक्षा।

- गुरुदेव, अभी परीक्षा का समय नहीं है, पहले आप स्वस्थ हो जाइये।

- तू ठीक कहता है, मैं स्व में स्थिर होने के लिये ही तुम्हें अपने संघ का आचार्य मनोनीत करना चाहता हूँ। मेरी अभिलाषा है कि 'आचार्य-भगवंत' से सल्लेखना व्रत प्राप्त कर अपनी यात्रा पूर्ण करूँ।

- गुरुदेव, आपसे अच्छे आचार्य-भगवंत कहाँ मिलेंगे?

- मेरे समीप ही।

विद्यासागर पू. ज्ञानसागर जी बातों से शिष्योचित लाज से भींग गये, कहें लजिया गये। थोड़ी देर मौन समाया रहा कक्ष में। फिर ज्ञानसागरजी पुनः कुछ बताने लगे। विद्यासागरजी ने उनके चरण पकड़ कर उन्हें याद दिलाया- गुरुदेव वार्ता का समय समाप्त हो गया, अब तो प्रतिक्रमण का समय है।

- वही तो कर रहा हूँ।

- नहीं गुरुदेव, भाव आपके अवश्य प्रतिक्रमण के हैं, पर शब्द नहीं हैं। शब्द तो याचना से भरे-भरे हैं। आप याचना न कीजिये, प्रतिक्रमण कीजिए और मुझे भी प्रतिक्रमण का अवसर प्रदान कीजिए।

गुणवान शिष्य की वार्ता से पू. ज्ञानसागरजी अपनी काया की सभी पीड़ायें भूले हुए थे। वार्ता बन्द हुई, पीड़ायें देह में रेंगने लगी।

गुरु के आगे शिष्य की बात मानी जावे- जरूरी नहीं है। अतः गुरुवर ने दूसरे दिन ही नगर के समाज-प्रमुखों को बुलाकर अपने मन का संकल्प बतला दिया और निर्देश दिये कि आचार्य पद त्याग का एक सादा कार्यक्रम 22 नवम्बर, 1972 को रखें।

गुरु की आज्ञा के समक्ष पंचों को कर्तव्य करने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं रह जाता।

सम्पूर्ण नसीराबाद में घंटे भर में ही समाचार फैल गया- 'आचार्यश्री पद त्याग रहे हैं।' दूसरे दिन समाचार अजमेर और जयपुर सहित अनेक नगरों तक जा पहुंचा।

अनेक नगरों के भक्त पहले से ही नसीराबाद में आकर उनके दर्शन लाभ का पुण्य ले रहे थे, बाद में जिन्हें समाचार समय पर मिलता गया, वे भी आते गये।

22 नवम्बर 1972 का दिन नसीराबाद के इतिहास का एक महत्वपूर्ण दिवस बनने वाला था। समाज के बालाबाल नरनारी कार्यक्रम स्थल पर उपस्थित थे। पंडितगण विधि-विधान के लिये द्रव्य सहित स्थान ले चुके थे। परमपूज्य आचार्य ज्ञानसागरजी महाराज एक ऊँचे सिंहासन पर विराजमान थे। समीप ही कुछ छोटे (नीचे) काष्ठासन पर पू. मुनि विद्यासागर जी अवस्थित थे, उन्हीं के समीप अन्य साधुगण।

समाज के मंत्री महोदय ने श्रोताओं के समक्ष विषय का खुलासा किया। तब तक पूज्य ज्ञानसागरजी स्वमेव मुखरित हो पड़े, वे अत्यन्त सहजता से बोले- 'बंधुओं! यह शरीर नश्वर तो है ही, अब पूर्ण जर्जर हो चुका है, धर्म-कार्य ऐसे दुर्बल साधन से कैसे सम्पन्न किये जा सके हैं, यह बेचारा अब आगे साथ दें असमर्थता जाहिर करने लगा है, अतः मैं आचार्य पद छोड़कर आत्मकल्याण करना चाहता हूँ। जैनागम में ऐसा करना सर्वथा उचित बतलाया गया है, अतः मैं अभी, इस क्षण, आचार्य पद से श्री विद्यासागरजी मुनि को आज्ञा देता हूँ कि वे यह आचार्य पद स्वीकार करें, ताकि मैं अपना आचार्य पद समाप्त कर सकूँ।'

उनकी वाणी सुनकर जनता पू. विद्यासागरजी की ओर देखने लगी। वे नजरें नीचे किये थे और गम्भीरता से नीचे की ओर देखते रहे।

फिर उन्होंने विद्यासागर जी को संकेत से बुलाया, वे गिरे मन से खड़े हुए, गुरुवर के पास आ गये। गुरुवर ने अपने उच्च काष्ठासन पर उन्हें बैठने का निर्देश दिया। वे बैठ गये। गुरुवर ने शास्त्रोक्त रीति से तुरंत, उपस्थित पंडितों के सहयोग से, आचार्य पद देने तथा अपना आचार्य पद समाप्त करने की विधि सम्पन्न की, फिर आचार्य से मुनि बने ज्ञानसागरजी 'छोटे' आसन पर बैठ गये।

मान का ऐसा मर्दन समाज ने कभी न देखा था, न सुना था, जो पू. ज्ञानसागरजी ने करके दिखलाया था। पद का मोह नष्ट कर देने का ऐसा भाव कभी देखने-सुनने को नहीं मिला था। जनसमुदाय ज्ञानसागर और विद्यासागर के जयघोष कर रहा था। अनेक आँखों में आँसू उतर आये थे, अनेक कंठ अवरुद्ध हो गये थे। वक्तागण बोलने में अवरोध महसूस कर रहे थे, गले भर आये थे।

छोटे (नीचे) आसन से पूज्य मुनि ज्ञानसागरजी ने एवं बड़े (ऊँचे) आसन पर विराजित नवपदारूढ़ आचार्य विद्यासागरजी ने आपस में नमोऽस्तु प्रति नमोऽस्तु किया। आचार्य विद्यासागर उच्चासन पर एवं अपने उपकारी गुरु को नीचे आसन पर बैठा देखकर उनकी आँखें रोने को बेताब। चित्त खीजने को उतावला। मन क्रंदन करने को बावला। जबकि ज्ञानसागरजी के चेहरे पर शांति थी, भार से बच जाने का भाव, उत्तरदायित्व पूर्ण करने की संतुष्टि थी और निर्यापकाचार्य के प्रति श्रद्धा थी।

एक कार्य पूर्ण ही हुआ था कि परम मेधावी तपस्वी और उदासीन संत मुनीन्द्र ज्ञानसागरजी ने हथेलियों के मध्य पिच्छिका सँभाले हुए, आचार्य

धम्मो दयाविसुद्धो (आ.कुन्द-कुन्द : बोधपाहुड, गा.25) । अर्थ- शुद्ध भाव से युक्त दयाधर्म हैं।

विद्यासागरजी से प्रार्थना की- हे आचार्य! मैं इस दुर्बल और जर्जर शरीर की सीमायें समझ चुका हूँ, सो मुझे अपने निर्देशन में सल्लेखना व्रत प्रदान कीजिए। मैं आपके निर्यापकत्व में समाधिमरण की अभिलाषा करता हूँ।

उनके हृदय से निकली आवाज का सत्य जनमानस पहिचान चुका था, अतः हर आँख दृश्य को देखकर डबडबा गई। सरल वैराग्य के साथ ज्ञानसागरजी का निस्पृहभाव एक-एक दर्शन की आँखों में सदा के लिये अँज गया उस दिन।

वह कार्यक्रम तो पूर्ण हो गया, पर पूज्य आचार्य विद्यासागरजी का कार्यक्रम यहां से प्रारम्भ हो गया था। आचार्य पद धारण कर उसके सच्चे निर्वाह का कार्यक्रम।

नसीराबाद तपस्थली बन गया था। दो महान संतों की तपः भूमि। पूज्य विद्यासागरजी रोज सुबह से शाम और शाम से रात्रि पर्यन्त अपना समय निर्यापकत्व में दे रहे थे और पूज्य ज्ञानसागरजी महाराज अपना समय शरीर से परे होने में दे रहे थे। 'धान' को हटाकर 'अक्षत' प्राप्त करने वाले ज्ञानवान किसान की तरह वे नित्य-नित्य अभ्यास कर रहे थे अपने देह रूपी शीपी मुक्ता को स्वातंत्र्य देने के लिये।

दोनों संत नहीं जानते थे कि जीवन की विविध तपस्याओं की तरह संल्लेखना की यह तपस्या भी सुदीर्घकाल तक करनी होगी। जो समाधि के लिए उपस्थित थे, वे तप में ही थे और जो समाधि की दीक्षा देकर उसका निर्वाह करा रहे थे, वे महातप में से होकर गुजर रहे थे- हर पल, हर दिन। (ज्ञान का सागर से साभार)

क्षुल्लिका अदेहमति की दीक्षा सम्पन्न

चतुर्थ पट्टाधीश श्री सुनील सागरजी द्वारा

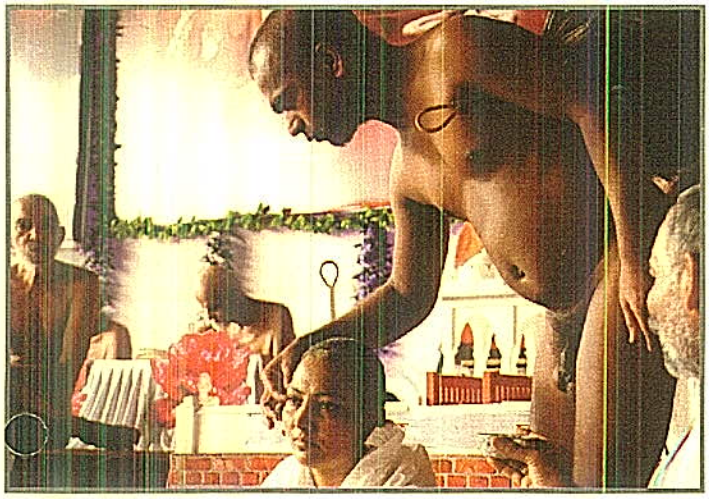

सूरत, 4 नवम्बर, 2014. प.पू.आचार्यश्री आदिसागरजी महाराज के तृतीय पट्टाधीश तपस्वी सम्राट आचार्यश्री सुनील सागरजी महाराज का 53वाँ दीक्षा दिवस मनाया गया। उसी दिन सुबह नव बने ब्र. रचना राकेश जैन पर्वत पाटीया सूरतवालों की क्षुल्लिका दीक्षा प.पू.चतुर्थ पट्टाधीश आचार्यश्री सुनील सागरजी महाराज के पावन पवित्र कर कमलों से हुई। रचना जी अपने व्याधिग्रस्त शरीर को संयम के मार्ग पर लगाया और जितना भी अपना जीवन है उसे गुरुदेव के चरणों में समर्पित कर दीक्षा ली। वह 35 साल की है, उनके दो लड़के भी हैं। पर शरीर साथ न देने से उन्होंने अपने पति और दोनों बच्चों का मोह छोड़ा और संयम के मार्ग पर लगाकर अपने मनुष्य जन्म को सफल किया।

आचार्यश्री ने भी उनके आत्मकल्याण हेतु उनके गृहस्थ परिवार एवं सूरज समाज की सहमति से उनको क्षुल्लिका दीक्षा प्रदान की और नाम रखा क्षुल्लिका अदेहमति। आचार्यश्री का मंगलमय प्रवचन हुआ। आचार्यश्री ने कहा- मनुष्य जीवन का गहना है दीक्षा। मनुष्य जीवन ऐसा जीवन है जिसमें संयम ग्रहण करके आत्मकल्याण करने का एक अद्भुत अवसर प्राप्त होता है। अपने भवों को सुधारने के लिए संयम जरूरी है। शरीर साथ नहीं देता है तो संयम ग्रहण करना तो अच्छा ही है। शरीर साथ न दे तो बिस्तर पर मरने से अच्छा है संयम ग्रहण करके संस्तर पर समाधिमरण करके गति सुधारना। तपस्वी सम्राट आचार्यश्री सन्मतिसागरजी गुरुदेव ने भी कार्तिक शुक्ला बारस को 53 साल पूर्व जैनेश्वरी मुनिदीक्षा ग्रहण की थी। उन्होंने अपने जीवन में बहुत तपस्या की। जब समाधि का समय आया तो पद्मासन में बैठ गये और अपने नश्वर शरीर को छोड़ा। उन्होंने अपनी दीक्षा को सफल किया। संयम बहुत कीमती है। आप भी संयम स्वीकार करें।

- अमृतभाई डोटिया, सूरत

निर्मल धर्म, सम्यकत्व, संयम, तप और ज्ञान जैन धर्म में तीर्थ है (बोधपाहुड गा.27)

नेपाल के आदिनाथ मंदिर में हुआ 'बुन्देली भक्तामर' का सांगीतिक प्रस्तुतीकरण

रचनाकार कवि कैलाश मड़बैया को मिला 'अन्तरर्राष्ट्रीय काठमाण्डु सृजन पुरस्कार.'

नेपाल के राष्ट्पति ने किया ऐतिहासिक बुन्देली ग्रंथ विमोचित

एंम्बेसडर और चांसलर ने किया अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य उत्सव का उद्घाटन

काठमाण्डु ,8नवम्बर, अखिल भारतीय बुन्देलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद भारत ,अनेकान्त ऐकेडमी और नेपाल के साहित्यिक समाज के तत्वावधान में आजादी के बाद पहली बार देश से बाहर ,काठमाण्डु में अन्तरराष्ट्रीय बुन्देली भाषा साहित्य सम्मेलन–2014 सम्पन्न हुआ।समारोह में प्रसिद्ध कवि कैलाश मड़बैया भोपाल को उनके पचास वर्षीय उत्कृष्ट साहित्य सृजन के लिये पचास हजार 50000 रु(नेपाली 80000रु), अंगवस्त्र,प्रतीक चिन्ह,श्रीफल और साहित्य से नेपाल के भारतीय ऐम्बेसडर श्री रणजीत रे ,चांसलर नेपाल अकादमी श्री गंगाप्रसाद उपरैती और नेपाल के सांसद श्री रामेश्वर फुयाल और श्री दीपक कुइकेल ने पहली बार किसी भारतीय जैन कवि को 'काठमाण्डो अन्तर्राष्ट्रीय शॉति साहित्य सृजन सम्मान–2014' से पुरस्कृत किया।इस अवसर पर नेपाल के राष्ट्पति श्री रामवरण यादव ने कवि कैलाश मड़बैया की 22वीं पुस्तक 'बुन्देली के ललित निबंध' ,जिसमें जैन तीर्थों पर भी दीर्घ लेख है, को राष्ट्पति भवन में प्रमुख साहित्यकारों के मध्य लोकार्पित किया/ चित्र संलग्न है/।

समारोह के प्रतिष्ठापूर्ण चरण में बुन्देली भाषा की सामर्थ्य प्रमाणित करने के लिये भक्तामर का पहली बार किसी लोक भाषा में,कवि कैलाश मड़बैया द्वारा किये गये बुन्देली अनुवाद का सांगीतिक प्रस्तुतीकरण नेपाल के आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में बुन्देली भक्तामर के रुप में किया गया। इसमें नेपाल की जैन समाज के अध्यक्ष श्री पंकज जैन,श्वेताम्बर समाज के अध्यक्ष श्री दिनेश नौलखा जैन,नेपाल जैन प्रतिष्ठान के प्रतापसिंह तातेर आदि अनेक महिला और पुरुषों ने संस्कृत में भक्तामर का पाठ किया तो भारतीय साहित्यकारों की ओर से अभिनंदन जैन गोइल टीकमगढ,प्रो.शील चंद जैन ललितपुर,विमला कल्याणी दमोह ,शकुन्तला दिवाकर विदि और सत्यनारायण तिवारी बुन्देली लोक गायक आदि 50 वरिष्ठ जैन एवं जैनेतर साहित्यकारों ने समवेत स्वर में बुन्देली भक्तामर की ऐतिहासिकरुप से शानदार प्रस्तुति दी। सारे काठमाण्डु में इस संगीतिक प्रस्तुति की धूम रही। समापन पर रचयिता कवि कैलाश मड़बैया एवं श्रीमती मालती मड़बैया को नेपाल समाज की ओर से भव्य सम्मान से अभिनन्दित किया गया। भारत से गये अन्य जैनेतर साहित्यकारों को भी उनके काव्यपाठ के लिये श्रीफल और श्रीमाल से सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि बुन्देली भक्तामर रचना की प्रथम प्रति गत वर्ष ही नेपाल से कैलाश मानसरोवर के ऊपर जाकर अष्टापद के आदिनाथ निर्वाण तीर्थ पर कवि मड़बैया दम्पति हेलीकोप्टर से ग्रंथ समर्पित हेतु सफल यात्रा कर बापस लौटे थे।

श्री मनोज कुमार कासलीवाल, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) का असामयिक दुःखद निधन

यह सूचित करते हुए अत्यन्त दुःख हो रहा है कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष श्री प्रमोद कासलीवाल के छोटे भाई श्री मनोज कुमार जम्मनलाल कासलीवाल का दिनांक 13 नवम्बर, 2014 को आकस्मिक दुःखद निधन हो गया। वे 45 वर्ष के थे। उनके एक पुत्र एवं दो पुत्रियां हैं।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके शोक संतप्त कुटुम्बीजनों को यह अपार दुःख सहन करने की शक्ति मिले, ऐसी वीर प्रभु से प्रार्थना करता है।

न्यायनिष्ठ की सम्पत्ति कभी कम नहीं होती। वह दूर तक पीढ़ी दर पीढ़ी चली जाती है (तिरुवल्लूर)

महामहिम पूर्व राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभाताई पाटील ने प्रथमबार दिगम्बर जैन मंदिर के दर्शन कर उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की

पूरे भारतवर्ष में शायद पहली बार ऐसा हुआ होगा कि महाराष्ट्र राज्य के विदर्भ प्रान्त में अमरावती जिले के अंदर नांदगांव पेठ जो हायवे नं. 6 पर स्थित है। इस छोटे से गांव में श्री 1008 पद्मप्रभु दिगम्बर जैन मंदिर संस्थान (अतिशय क्षेत्र) स्थित है। इस मंदिर जी में देश की प्रथम नागरिक महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभाताई पाटील एवं डॉ. देवीसिंह जी शेखावत इन्होंने आकर मनोज्ञ प्रतिमा का दर्शन कर श्रीफल अर्पण किया। यह इस मंदिर जी का अहोभाग्य है कि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के आशीर्वाद का ही फल है।

महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभाताई पाटील जी ने अपने मार्गदर्शन में बताया कि राष्ट्रपति पद के पॉच साल के कार्यकाल में मैंने पहली बार जैन मंदिर में जाकर प्रतिमा का दर्शन किया। यह मैं अपना अहोभाग्य समझती हूँ। भ. महावीर के अहिंसा परमो धर्मः के विषय पर जैन तथा अजैन समाज को उचित मार्गदर्शन कर इस छोटे से गांव के समाज तथा मंदिरजी के ट्रस्टियों की प्रशंसा की और भविष्य में मंदिर जी के अधूरे कार्य के लिए एकजुट होकर काम करने की सलाह दी।

सतना, म.प्र. में चातुर्मास कर रहे परम पूज्य विनीत सागरजी महाराज के दर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन एवं श्री सुरेश जैन कटनी

दान, पूजा, तीर्थाटन आदि यदि सम्यग्ज्ञान से सुशोभित है तो वे मुक्ति के कारण हैं (उत्तर पुराण)

गोटेगांव (श्रीधाम) में आयोजित जैन मेघावी प्रतिभा सम्मान समारोह की झलकियां

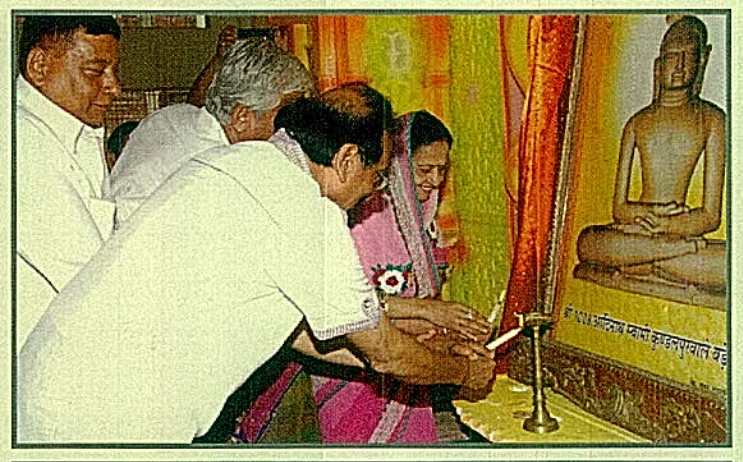

दर्शन ज्ञान और चारित्रवान सभी जिनेश्वर भावतीर्थ हैं (मूलाचार, गा.562)

गोटेगांव (श्रीधाम) में आयोजित जैन मेधावी प्रतिभा सम्मान समारोह की झलकियां

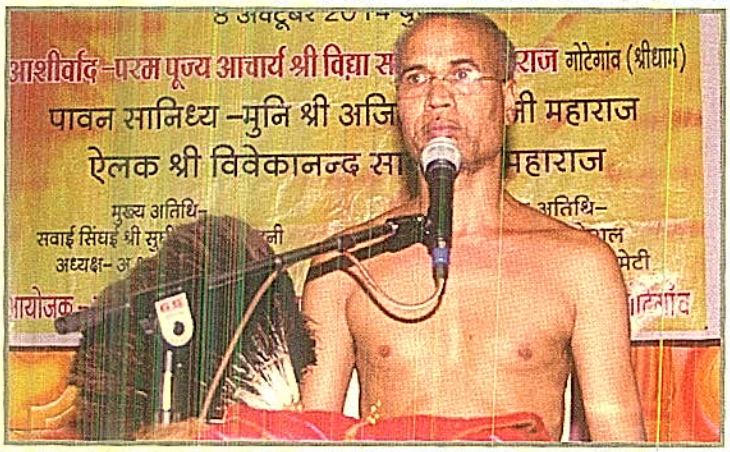

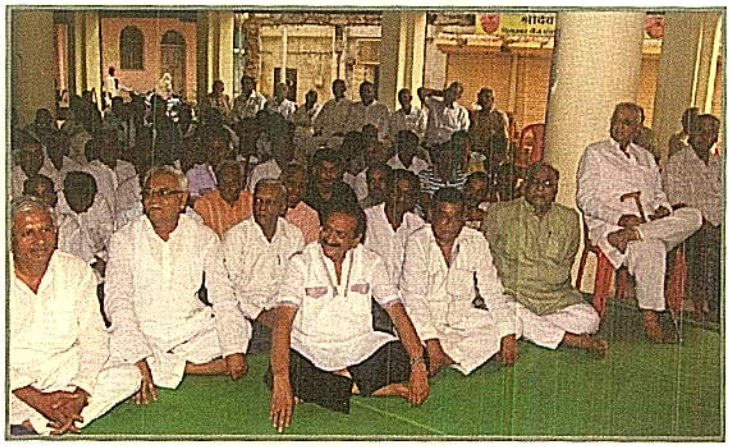

स्वभाषा प्रेम के विषय में मूर्धन्य महानुभावों के विचार

मेरी आँखें उस दिन को देखने के लिए तरस रही हैं, जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक सब भारतीय एक ही भाषा को समझने और बोलने लगेंगे।

- महर्षि दयानन्द सरस्वती (राष्ट्र पितामह)

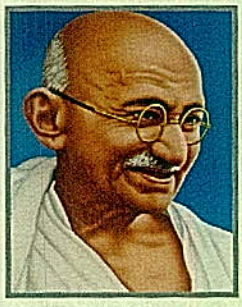

यदि मैं तानाशाह होता तो आज ही विदेशी भाषा में शिक्षा दिया जाना बंद कर देता। सारे अध्यापकों को स्वदेशी भाषाएँ अपनाने को मजबूर कर देता। जो आनाकानी करते उन्हें बरखास्त कर देता।

- महात्मा गांधी (राष्ट्रपिता)

मेरी समझ में वे लोग बेवकूफ हैं, जो अंग्रेजी के चलते हुए समाजवाद कायम करना चाहते हैं। वे भी बेवकूफ हैं, जो समझते हैं कि अंग्रेजी के रहते हुए जनतंत्र भी आ सकता है। थोड़े से लोग इस अंग्रेजी के जादू द्वारा करोड़ों को धोखा देते रहेंगे।

- डॉ. राममनोहर लोहिया
(अंग्रेजी हटाओ आंदोलन के आदि प्रवर्तक)

आज देश की दुर्दशा यह है कि अंग्रेजी प्रमुख भाषा बन बैठी है और हमारी सब भाषाएं गौण बनी हुई हैं। इसे बदलना होगा। यदि हम समझते हैं कि हम स्वतंत्र राष्ट्र हैं तो हमें अंग्रेजी के स्थान पर स्वभाषा लानी होगी।

- गुरु मा.स.गोलवलकर
(रा.स्व.-संघ के सरसंघचालक)

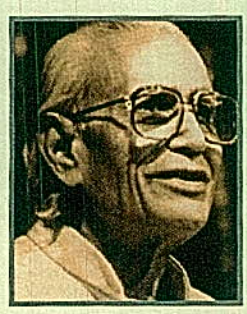

भारत में भारतीय भाषाओं की सार्वजनिक प्रतिष्ठा के लिए 'अंग्रेजी हटाओ आंदोलन' उतना ही आवश्यक और तर्कसम्मत है, जितना कि स्वातंत्र्य-पूर्व युग में स्वदेशी की प्रतिष्ठा के लिए विदेशी वस्त्रों की होली जलाना।

- डॉ. धर्मवीर भारती
(महान संपादक और साहित्यकार)

शाकाहार के विषय में महात्मा गांधी के विचार

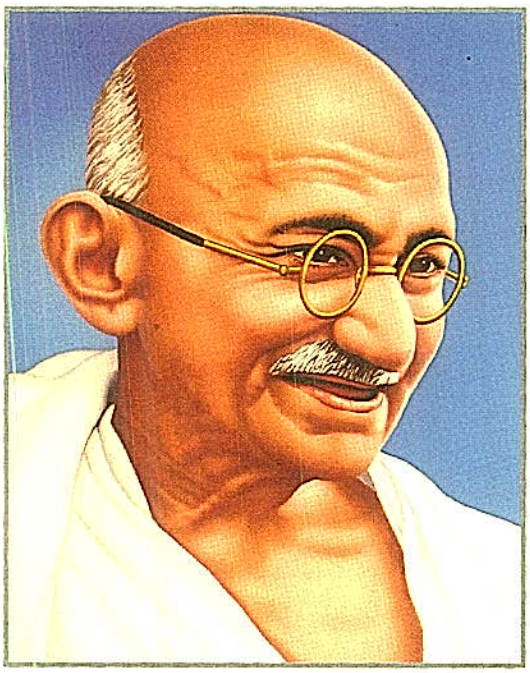

सत्यांवेषक के रूप में मुझे ऐसा लगता है कि जिससे शरीर, मन और आत्मा सुदृढ़ रहे ऐसा एक परिपूर्ण आहार मनुष्य के लिए खोजना चाहिए।

जीने के लिए मनुष्य को किसी भी परिस्थिति में मांस भक्षण की आवश्यकता नहीं होती। मांसाहार करना पूर्णतः अनुचित है। हम पशुओं की अपेक्षा श्रेष्ठ होते हुए भी उनकी तरह का व्यवहार करने की गलती करते रहते हैं।

डॉक्टरों और विद्वानों के शाकाहार के प्रति पक्षपातपूर्वक अध्ययन एवं संशोधनों में मांसाहार-उत्पादन से संबंधित लोग अड़चन निर्माण कर रहे हैं।

बचपन से ही मेरा संगोपन शाकाहार के माध्यम से ही हुआ। शिक्षण एवं संस्कार से मैं शाकाहारी हूँ। मनुष्य के लिए उचित शाकाहार हो, इसके लिए मैं कई वर्षों से अनेकों प्रयोग करता रहा हूँ।

योग्य हो या अयोग्य, पर मेरे धार्मिक मतानुसार मनुष्य को मांस व अंडे जैसे पदार्थ कभी नहीं खाने चाहिए। जीने के लिए भी स्वयं को एक मर्यादा, एक बंधन का अनुपालन करना चाहिए। मांसाहार न करने से आत्मा निश्चित ही उच्च स्तर पर पहुँचती है।

जो अपने कषायों को नियंत्रित करना चाहते हैं, अपने काबू में रखना चाहते है उनके लिए तो मांसाहार निश्चित रूप से अयोग्य एवं अनुचित है। तथापि केवल चारित्र्य पालन के लिए सिर्फ आहार को ही अधिक महत्व देना अवास्तविक होगा तथा आहार के बारे में सभी धर्मों के अनुरूप गुणा-भाग करना भी अपनी जिह्वा - लोलुपता को पूर्ण करने के लिए संयम के छोड़ने के समान ही अयोग्य और गलत है।

'शाकाहार ने अपने को शारीरिक व मानसिक दृष्टि से दुबला, पतला, निष्क्रिय एवं आलसी बनाया है' - यह जो गलत धारणा प्रचलित हुई है, उसे हमें दूर करना है। हिंदू धर्म के महान सुधारकों ने अपने-अपने समय में बहुत ही अच्छे-अच्छे कार्य किये हैं। वे सभी शाकाहारी ही थे।

मनुष्य जैसा खाता है वैसा ही उसका व्यवहार होता है।

कोई मनुष्य यदि पाशविक वृत्ति पर नियंत्रण रखना चाहता है तो उसे सर्वप्रथम अपनी जिह्वा पर नियंत्रण रखना होगा। यह एक 'असिधारा' व्रत है। इसका अनुपालन अत्यंत कठिन है। जब तक हम उत्तेजक, उग्र व विक्षोभक मिर्ची-मसालों से दूर नहीं रहेंगे तब तक हम इन पाशविक विचारों से मुक्त नहीं हो सकते।

मनुष्य अनावश्यक पदार्थ भी खाता है। आपने कभी गाय व घोड़े को अनावश्यक चीजें खाते देखा है क्या? आप इसे उच्च संस्कृति का प्रतीक समझते हैं क्या? हम अपने खाद्य पदार्थों की संख्या बढ़ाते जा रहे हैं। 'हम किस दिशा में बढ़ते जा रहे हैं' - इसका भान भी नहीं है। पागलपन की हद तक हम नित नये-नये पदार्थ बनाते जा रहे हैं और पदार्थों का विज्ञापन करने वाले अखबारों (नियतकालिकों) के पीछे-पीछे दौड़ रहे हैं।

तत्त्वनिष्ठा व पुरुषार्थ की विजय

महात्मा गांधी के जीवन की एक घटना है। उनका दूसरा बेटा मणिलाल विषम ज्वर से पीड़ित था। डॉक्टरों का कहना था कि बच्चे के जान को खतरा है। सिर्फ औषधि से कुछ फायदा नहीं होगा। उसे अंडे और मुर्गे के मांस का रस्सा देना होगा।

मनुष्य की नैतिक परीक्षा ऐसे समय में ही होती है। गांधीजी कसौटी की इस घड़ी में भी अपने तत्वों के प्रति प्रामाणिक रहे।

गांधीजी ने डॉक्टरों की इस सलाह को नहीं माना। बेटे पर 'क्युनि' पद्धति से उपचार शुरू किया। पहले तीन दिन तक नारंगी का रस और पानी ही देते रहे, परन्तु बुखार कम नहीं हो रहा था। बच्चा कभी-कभी बुखार में बड़बड़ाता भी था।

गांधीजी बेचैन हो गये। उन्होंने ईश्वर पर विश्वास रखा। एक चादर लिया और ठंडे पानी में भिगोकर बच्चे को सिर से पाँव तक उस गीले चादर से लपेटकर रखा। माथे पर गीला रूमाल रखा। बच्चे का पूरा शरीर तप्त लोहे की तरह दहक रहा था। पसीना भी नहीं छूट रहा था।

बेटे को कस्तूरबा के स्वाधीन करके गांधीजी बाहर निकल गये। गांधीजी अत्यन्त ही बेचैन हो गये थे। उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की और आशीर्वाद मांगा; क्योंकि उन्होंने कई लोगों की सलाह अमान्य करके एक कठिन निर्णय लिया था। जब वे वापस आये तब उनकी छाती धड़....धड़... धड़क रही थी। मगर घर के अंदर जैसे ही पाँव रखा कि उनके कान में उनके बच्चे की आवाज सुनाई दी- 'बापूजी, मुझे इस चादर से बाहर निकालो, खूब पसीना हुआ है।'

उन्होंने देखा कि बच्चे को पसीना हो रहा था। माथे से पसीना बहने लगा था। उन्होंने चादर दूर की। बच्चे के शरीर को पोछा, सुबह तक मणिलाल का बुखार बहुत ही कम हो गया था। तत्त्वनिष्ठा और पुरुषार्थ की विजय हुई।

(अहिंसक शाकाहार से साभार)

संतो हि हितभाषिणः (उत्तरपुराण, पर्व 70, श्लोक 325) । अर्थ- साधु-संत आत्महित का उपदेश देते हैं ।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

अंचलीय समितियों का गठन

कर्नाटक अंचल

PARAM SAMRAKSHAK
Param Pujya Bhattarak Swamijis of All Jain Maths of Karnataka
SAMRAKSHAK
Pujya Shri D. Veerendra Hegade, Dharmasthala
PRESIDENT
Shri D. R. Shah, Indi (9448375970)
SECRETARY
Shri Vinod S. Doddanavar, Belgaum (9880022555)
TREASURER
Shri Ashok Sethi, Bangalore (9900420001)
COMMITTEE MEMBERS

6. Shri S. Jitendrakumar, Bangalore (9845074331
7. Smt. Sushila Baj, Banlgalore (94486149179)
8. Shri S.N.Prakash Babu, Mysore (9448173735)
9. Shri G.P.Anantraju, Mysore (9448073021)
10. Shri Nihalchand Jain, Bangalore
11. Shri Abhinandan Kocheri, Belgaum (9448339730)
12. Shri Arun Yalgundri, Athani (9448114746)
13. Shri Sripal Munavalli, Chikkodi (9448163553)
14. Shri Rajeev S. Doddanavar, Belgaum (9845274791)
15. Shri Rayappa U. Korugeri, Hanigeri (9591852599)
16. Shri Sudhir A. Kusunale, Hubli (9243282246)
17. Shri Sharad R. Patravali, Dharwad (9449087199)
18. Shri Chandrakant S. Hosmani, Hubli (9448277283)
19. Shri Prakash F. Jain, Gulbarga (9448359488)
20. Shri Veerkumar Mehta, Gulbarga (9448585778)
21. Shri Vijaykumar Jain, Bidar (9845334456)
22. Shri Deepak A. Pandit, Gulbarga (9980783999)
23. Shri Jinendra N. Tikke, Bidar (9880395004)
24. Shri Ramanna Muttur, Jamkhandi (9448113203)
25. Shri Bhupal H. Sanami, Bagalkot (944889695)
26. Shri Sheetal S. Ogi, Bijapur (9741900737)
27. Shri Anedu Dineshkumar Jain,Mudabidari (9845050604)
28. Shri Mahaveer Jain, Bhajguli (9448484941)
29. Dr. Nagaraj, Shimoga (9448200108)
30. Shri Ajitkumar Jain, Hassan (9980776276)

मध्यांचल

संरक्षक

1. श्री भरत मोदी, इंदौर 9826033128
2. श्री नरेन्द्रकुमार बीड़ीवाले, इंदौर 9425321150
3. श्री संजय जैन मैक्स, इंदौर 9425053521
4. श्री नवीन जैन, गाजियाबाद 9617789901

परामर्शदाता

श्री सुरेन्द्र बाकलीवाल, इंदौर 9425064525

अध्यक्ष

श्री विमल सोगानी, इंदौर 9826027577

वरिष्ठ उपाध्यक्ष

1. श्री डी.के.जैन, इंदौर 9827096093
2. श्री सिंघई संतोष कुमार जैन,दमोह 9425611762
3. श्री बीरेश सेठ जैन, दमोह 9425095618
4. श्री पदमचंद जैन, बेगमगंज 9425351859
5. श्री सुनील जैन, अरिहंत केपिटल 9303228450
6. श्री अनिल जैन, जैनको, इंदौर 9425312665
7. श्री संतोष जैन ठेकेदार, जबलपुर 9425323758

उपाध्यक्ष

1. श्री कमल अग्रवाल, इंदौर 9425316858
2. श्री प्रदीप बड़जात्या, इंदौर 9425900853
3. श्री अनिल जैन, गुना 9425131858
4. श्री पंकज जैन, भोपाल 9425303705
5. श्री मनोज पाटोदी, इंदौर 9425075060
6. श्री अशोक पाटोदी, इंदौर 9425064708
7. श्री अमित पडरिया, जबलपुर 8989890989
8. श्री प्रतिपाल टोंग्या, इंदौर 9302106984
9. श्री कुशल बाकलीवाल,खातेगांव 9425059636

महामंत्री

1. श्री अरविन्द सिघई, मुंगावली 9425462889

मंत्री

1. श्री जेनेश झांझरी 9425313196

संगठन मंत्री

1. श्री आनंद जैन, सागर आनंद स्टील 9425171401
2. श्री इंजी. रमेश जैन, सतना 9827359275
3. श्री प्रशांत घाटे, इंदौर 9425081690
4. श्री प्रमोद पापड़ीवाल, इंदौर 9425055366
5. श्री वीरेन्द्र बड़जात्या, इंदौर 9406853200
6. श्री अशोक जैन, इंदौर 9425052634
7. श्री विनोद मोदी, अशोकनगर 9425361284
8. श्री भरतेश बड़कुल,इंदौर 9327015631

प्रशासन मंत्री

1. श्री राजकुमार जैन, मनावर 9993737000
2. श्री प्रमोद कुमार जैन, कटनी 9425153936
3. श्री जैनेन्द्र जैन, गंधवानी 9425059941
4. श्री कमलेशजी सेठी, खंडवा 9425085286

कोषाध्यक्ष

1. डॉ. संजय जैन, इंदौर 9425076760

सहकोषाध्यक्ष

1. श्री कैलाश सेठी, इंदौर 9826058181

युवा मंत्री

1. श्री विपिन गंगवाल, इंदौर 9425055110

कार्यकारिणी सदस्य

1. श्री प्रेमचन्द जैन प्रेमी, कटनी 9425174433
2. श्री विजय जैन, दुर्ग
3. श्री विपिन जैन, गंजबासौदा 9425432145
4. श्री अनिल जैन लल्लन,कटनी 9425859366
5. श्री विनोद जैन, एमपीडी, भोपाल 9826042588
6. श्री दिलीप जैन, मिंगू, भोपाल 9893495095
7. डॉ. संजय जैन, सागर
8. श्री सुरेन्द्र जैन, कलशघर,इंदौर 9300761824
9. श्री चिराग जैन, इंदौर 9329807688
10. श्री अजय जैन, इंदौर 9425346960
11. श्री राय सेठ चंदकुमार, जबलपुर 9425387667
12. श्री राकेश गोहिल, भोपाल 9826634964
13. श्री मनोज जैन बागा, भोपाल 9406542464
14. श्री प्रदीप जैन, नोहर कला, भोपाल 9425006395

महाराष्ट्र अंचल

संरक्षक

1. मा.आ.श्री प्रकाश कल्लाप्पा आवाडे इचलकरंजी
2. श्री डी.ए.पाटील जयसिंगपुर

किं न स्यात्साधुसंगमात् (उत्तरपुराण, 62, 350)। अर्थ साधु के समागम से क्या नहीं होता है। अर्थात सभी कार्य व मनोरम सफल हो जाते हैं।

3.	श्री दीपक उत्तमचंद जैन (डी.यू.)	मुंबई
4.	श्री शांती काका खुशालचंद गांधी(सराफ)	फलटण
5.	श्री अरविन्दकुमार कचरालालजी गांधी	मुंबई
6.	श्री माणिकचंद बालचंदजी गंगवाल	औरंगाबाद
7.	श्री डी.बी.कासलीवाल	औरंगाबाद
8.	श्री जमनालालजी नाथुलाल हपावत	मुंबई
9.	श्री प्रकाशचंद चोधूलाल सेठी	नांदेड़
10.	श्री कमल शांतिलाल कासलीवाल	मुंबई
11.	श्री महावीर पन्नालालजी गंगवाल	औरंगाबाद
12.	श्री राजमल जयराज पेमावत	मुंबई
13.	श्री हिराचंद माणिकलाल गांधी(बाबूभाई)	अकलुज
14.	श्री अमृतलाल जोतमल झोलावत	मुंबई
15.	श्री नरेश बंसीलालजी पाटनी	नागपुर
16.	श्री सुरेश हुकुमचंद कासलीवाल	औरंगाबाद
17.	श्री सी.आर.पाटील	पुना
18.	श्री माणिकचंद कपूरचंद जैन	मुंबई

उपाध्यक्ष

1.	श्री प्रमोदकुमार जम्मनलालजी कासलीवाल	औरंगाबाद

वरिष्ठ उपाध्यक्ष

1.	श्री अनिल कुमार पवनकुमार जमगे	सोलापुर

उपाध्यक्ष

1.	श्री ललित बबनलालजी पाटनी	औरंगाबाद
2.	श्री अनिल कुमार गोपालराव जोहरापुरकर	नागपुर
3.	श्री अशोक कांतीलाल दोशी	मुबई
4.	श्री राकेश बाबूलालजी पाटनी	नागपुर
5.	श्री जयकुमार जीवराज शहा	बारामती
6.	श्री संतोषकुमार नेमीचंद काला	नांदेड़
7.	श्री ओमजी जुगराजजी पाटनी	इचलकरंजी
8.	श्री पवन जयचंदजी पाटनी	नाशिक
9.	श्री कमल चिरंजीलाल गंगवाल	मुंबई

महामंत्री

1	श्री देवेन्द्र कुमार मोहनलालजी काला	औरंगाबाद

मंत्री

1.	बा.ब्रह्मचारिणी वैशाली दीदी, णमोकार तीर्थ	चांदवड
2.	श्री महावीर झुंबरलालजी बड़जाते	अहमदनगर
3.	श्री डॉ. अतुल सतीशजी जैन(सोनगिर)	नाशिक
4.	श्री रविन्द्र कृष्णनाथजी कटके	सोलापुर
5.	श्री मिहिर बाहुबलीजी गांधी	अकलूज
6.	सी.ए.श्री श्रीनिवास एस. कस्तुरीवाले	नागपुर
7.	श्री विपिन नेमीचंदजी कासलीवाल	औरंगाबाद
8.	श्रीमती ज्योतीताई संतोषजी पाटणी	नागपुर
9.	श्री नंदकिशोर मोतीलाल शहा	सोलापुर
10.	श्री निरंजनकुमार बसंतकुमार जैन(बोहरा)	मुंबई
11.	श्री प्रीतम राजकुमार शहा पळसदेवकर	पूना
12.	श्री जितेन्द्रकुमार छगनलालजी तोरावत(जैन)	नागपुर
13.	श्री आशुतोष धन्यकुमारजी जोहरापुरकर	कारंजा-लाड
14.	श्री मयंक प्रवीणचंदजी संकेश्वरा	मुबई
15.	श्री तेजकुमार मूलचंदजी झांझरी	औंढा नागनाथ

कोषाध्यक्ष

1.	श्री मनोज कुमार दुलीचंदजी साहुजी	औरंगाबाद

सह कोषाध्यक्ष

1.	श्री भरत कुमार मदनलालजी ठोले	औरंगाबाद

कार्यकारिणी

1.	श्री नितीन इंदरचंदजी गंगवाल	औरंगाबाद
2.	श्री सतीश सुंदरलालजी जैन (पेंढारी)	नागपुर
3.	श्री संजय पन्नालालजी पापडीवाल	पैठण
4.	श्री विनोद रूपचंदजी लोहाड़े	औरंगाबाद
5.	श्री रविकुमार झुंबरलालजी बज	वाशिम
6.	श्री प्रकाश भिकचंदजी ठोले	औरंगाबाद
7.	श्री पंकज हेमचंदजीजैन (बोहरा)	नागपुर
8.	श्री अशोक कुमार जी सोमचंदजी मेहता	मुंबई
9.	श्री विजयकुमार धन्नालालजी लोहाड़े	नाशिक
10.	श्री किशोर शांतिलालजी गंगवाल	शिर्डी
11.	श्री संतोष रतनलालजी शहा	मुंबई
12.	श्री महेन्द्रकुमार चंद्रशेखर ठोले	औरंगाबाद
13.	श्री दिलीप केशवरावजी राखे	नागपुर
14.	श्री अश्विन रतीलालजी शहा	मुंबई
15.	श्री हरिषभाई गेबीलालजी (हिकावत)	नागपुर
16.	श्री प्रदीपजी नाथूलालजी सेलावत	मुंबई
17.	श्री रविन्द्र गुलाबजी सावजी(आग्रेकर)	नागपुर
18.	श्री कमलेश रमणलालजी दोशी	मुंबई
19.	श्री महावीर विजयकुमारजी शहा	शिरपुर
20.	श्री महावीर कमलाकरजी पेंढारी	मुंबई
21.	श्री मंगेश भरतजी दोशी	फलटन
22.	श्री दिलीप पोपटलालजी दोशी	मुंबई
23.	श्री दीपक जम्बूकुमारजी शहा	सोलापुर
24.	श्री सुभाष बाबूरावजी मगदूम	मुंबई
25.	श्री महेश भारतजी नळे	सोलापुर
26.	श्री वालचंद बालमुकुंदजी पाटील	कुमठे
27.	डॉ. विकास विजयकुमारजी शहा	बालनन्दनगर
28.	श्री अरविन्द माणिकचंदजी दोशी	फलटन
29.	श्री भंवरलाल त्रिलोकचंदजी जैन	नागपुर
30.	श्री जितेन्द्रकुमार वसंतलालजी किकावत	मुंबई
31.	श्री संदीपकुमार शांतीलाल खेतावत	मुंबई

वैधानिक (कानूनी सलाहकार) समिति

1.	एडवोकेट श्री माणिकचंद प्रतापमलजी बज	वाशिम
2.	एड. श्री उल्हास जयकुमारजी चिप्रे	सांगली
3.	एड. श्री मनीष रखबसाजी जोहरापुरकर	नागपुर
4.	एड. श्री पी. एफ.पाटणी	औरंगाबाद

परामर्श मंडल

1.	श्री पन्नालाल बालचंदजी पापड़ीवाल	पैठण
2.	श्री मोहनलाल तारानंदजी काला	नांदेड़
3.	श्री श्रीपाल दीपकचंदजी गंगवाल	गेवराई
4.	श्री महावीर प्रभानंदजी शास्त्री	सोलापुर
5.	एड. श्री एम.आर.बड़जाते	औरंगाबाद
6.	श्री प्रकाश काका पुरणमलजी पाटणी	औरंगाबाद
7.	श्री रमणीकलाल रामचन्द्रजी कोटड़िया	निरा
8.	श्री महावीर झुंबरलालजी पाटणी	औरंगाबाद
9.	श्री नितिन अंबादासजी नखाते	नागपुर
10.	श्री हर्षवर्धन रतनचंदजी शहा	सोलापुर
11.	श्री महावीर दुलचंदजी टाया	मुंबई
12.	श्री रविन्द्र अप्पासाहेब देवमोरे	इचलकरंजी

शेष अगले अंक में

जो पापों के शमन होने में कारण है, वह तीर्थ है (हरिवंशपुराण 50, 60)

हमारे नये बने सदस्य

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार में हम हृदय की गहराईयों से आप सभी का स्वागत करते हैं, अभिनंदन करते हैं।

आजीवन सदस्य

Shri Sanjay Subhashchand Jain, Satna

Shri Samanvay S/o Dr. S.K.Jain, Satna

Shri Anandkumar Sureshchand Jain, Satna

Smt. Sangeeta Naveen Jain, Delhi

Shri Dinesh Ratanlal Khodaniya, Sagwara

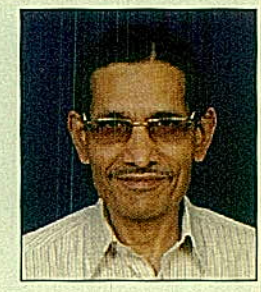

Shri Suresh Chandra Sajjanlal Jain, Ahmedabad

Smt. Shalini Rakesh Kumar Jain, Delhi

Ad. Nishikant Jivandhar Phursule, Gandhinagar

Shri Ramesh Kumar Fakeerchand Gangwal, Jaipur

Smt. Jaya Devendra Kumar Jain, Satna

Smt. Kalpana Prakashchand Jain, Satna

Shri Sunny Bhanukumar Jain, Satna

Shri AjayKumar Premchand Jain, Satna

Shri Praveen Rishav Vaidya, Satna

Shri Sanmati Shantikumar Gandhi, Solapur

Shri Ankit Somchand Jain, Mumbai

Shri Vikas Somchand Jain, Mumbai

Shri Pradeep Kumar Baburam Jain, Mumbai

Shri Manoj Babulal Patni, Mumbai

Shri Shitalkumar Sagardatta Ogi, Bijapur

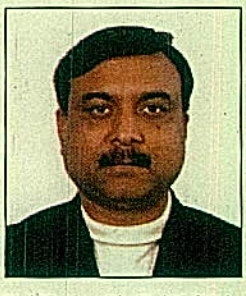

Shri Naveen S/o Shri N.C.Jain, Agra

Shri Chakresh S/o Shri N.C.Jain, Agra

Shri Yogesh S/o Shri N.C.Jain, Agra

Shri Abhinandan PradeepKumar Jain, Agra

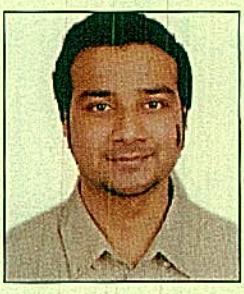

Shri Anirudh PradeepKumar Jain, Agra

सरलता, सादगी और सद्भावना ही जीवन का सही धर्म है।

आजीवन सदस्य

Shri Dinesh Kumar Deepchand Chaudhary, Mumbai

Shri Sunderlal Madanlal Jain, Mumbai

Shri Ayush Khushalchand Jain, Mumbai

Shri Dilip chandrakant Choudhary, Aurangabad

Shri Alokkumar Vijaykumar Jain, Mumbai

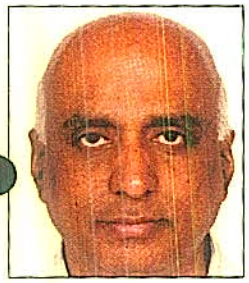
Shri Dinesh KolaiahKargal, Navi Mumbai

Shri Mahaveer Indrachand Jain, Mumbai

Shri Satish Jinappa Jain, Bhayandar

Smt. Sanmati Satish Jain, Thane

Shri Naman Dharmendra Jain, Bhayandar

Shri Rajesh Ratanlal Jain, Bhayandar

Shri Praveen Komalchandra Jain, Navi Mumbai

Shri Abhishek Kapoorchand Jain, Navi Mumbai

Smt. Archana Abhishek Jain, Navi Mumbai

Smt. Vidhi Praveen Kumar Jain, Navi Mumbai

Shri Sagar Kiranlal Jain (Shastri), Mira Road

Shri Bhupendra Shantilal Sanghvi, Mumbai

Shri Naresh Shantilal Sanghvi, Mumbai

Shri Mitesh Naresh Sanghvi, Mumbai

Shri Naresh Chandulal Shah, Mumbai

Shri Mehul Shashikant Shah, Mumbai

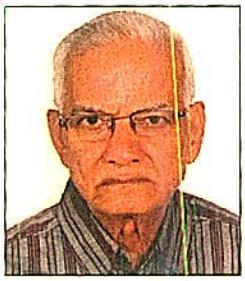
Shri Jaysukhlal Hirachand Vasani, Mumbai

Shri Dularesh Kumar Kailashchand Jain, Mira Road

Sou. Aarti Sukumar Patil, Mumbai

Shri Sukumar Appasaheb Patil, Mumbai

हमारा धर्म कथनी प्रधान नहीं, करनी प्रधान है ।

आजीवन सदस्य

Shri Shantilal Bechardas Gandhi, Mumbai

Shri Kamal Kumar Prakashchand Jain, Navi Mumbai

Kum. Mukta Suresh Jain, Shivpuri

Shri Niraj Kumar Mahendra Kumar Jain, Navi Mumba

Shri Alok Vinod Kumar Jain, Navi Mumbai

Smt. Nidhi Alok Jain, Navi Mumbai

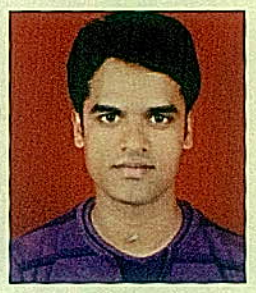
Shri Bahubali Dhulappa Akiwate, Mumbai

Shri Shashank Sharad Kumar Jain, Navi Mumbai

Kum. Akash Surendra Kumar Jain, Navi Mumbai

Kum. Sonal Anand Kumar Jain, Navi Mumbai

Shri Shashank Jitendra Jain, Navi Mumbai

Shri Praful S/o Shri P.C.Jain, Navi Mumbai

Smt. Aashita Saurabh Jain, Navi Mumbai

Shri Rishi Madan Kumar Jain, Nagpur

Sou. Vinjal Rishi Jain, Nagpur

Shri Saurabh Anil Kumar Jain, Navi Mumbai

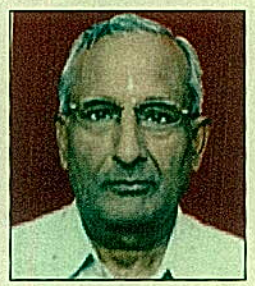
Shri Bhupendra Kumar Omprakash Jain, Navi Mumbai

Shri Sanjay Rajnikant Shah, Ahmedabad

Shri Ramesh Gulabraoji Ghodke, Aurangabad

Shri Padamchand Chandmal Jain, Mumbai

Shri Anil Shivcharan Jain, Mumbai

Shri Rakesh Moolchand Jain, Mumbai

Shri Subodh Kumar Jain, Indore

Shri Sheel Kumar Inder Sain Jain, Indore

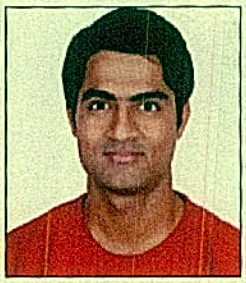
Shri Nitin Kumar Vijay Kumar Singhai, Mumbai

धन से सुविधायें मिल सकती हैं सुख नहीं।

आजीवन सदस्य

Shri Mayank Pawan kumar Jain, Navi Mumbai

Shri Shashank Sharad Jain, Mumbai

Shri Shubham Subhashchand Jain, Mumbai

Shri Rishabh Pawan Kumar Kala, Mumbai

Shri Ankur Rajkumar Jain, Mumbai

Shri Amit Vritichand Jain, Mumbai

Shri Nakul Nitin Jain, Mumbai

Shri Simit Rajesh Jain, Mumbai

Shri Madhur Santosh Thole, Mumbai

Shri Nishant Mukesh Kumar Jain, Mumbai

Shri Kartik Narendra Kumar Jain, Mumbai

Shri Ujjwal Nagendra Jain, Navi Mumbai

Sou. Sikha Ujjwal Jain, Navi Mumbai

Shri Anil Tarachand Jain, Navi Mumbai

Shri Nishank Jaikumar Jain, Navi Mumbai

Shri Shubham Mahesh Jain, Navi Mumbai

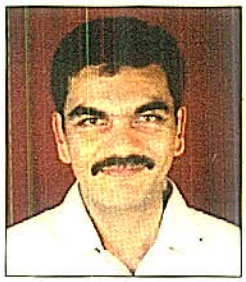

Shri Tushar Bhupendra Kothari, Mumbai

Shri Kunal Tushar Kothari, Mumbai

Shri Harshad Bhanwanlal Jain, Mumbai

Shri Pavankumar Punamchand Jain, Mumbai

Smt. Bindu Sagar Jain, Mira Road

Shri Lawkesh Nemichand Jain, Navi Mumbai

Smt. Arpana Saurabh Jain, Navi Mumbai

Shri Saurabh Manikant Jain, Navi Mumbai

Sou. Pramila Vimal Kumar Jain, Mumbai

कि न स्यादसाध्यसंगमात् (उत्तरपुराण 62, 350)। अर्थात् साधु के समागम से क्या नहीं होता है। अर्थात् सभी कार्य व मनोरथ सफल हो जाते हैं।